Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 17 v d 09 30 fl rEcj 2017 eY; 5 #i;

प्रधान की कलम से

सामाजिक क्रांति के सूत्राधार–ताऊ देवीलाल

(२५ सितंबर जन्म दिवस पर विशेष)

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

सर्वसाधन सम्पन्न परिवार में एक महान क्रांतिकारी का जन्म एक शती पूर्व 25 सिंतबर, 1914 को अब हरियाणा के सिरसा जिला गांव तेजा खेड़ा में हुआ। बचपन विलासपूर्ण था लेकिन गांव में अपने ही खेल खलिहान के कामगारों की अभावग्रस्त जीवन शैली ने अबोध मन को हिलाकर रख दिया। स्वतंत्रता संग्राम की अग्नि प्रज्वलित हो चुकी थी और बाद के विनाभा भावे के भू-दान का इस बाल मन पर गहरा असर हुआ। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में तन, मन, धन से यह रजवाड़ा जमींदार कूद पड़ा। महात्मा गांधी के आंदोलन में पढ़ाई छोड़ दी और जेल में आना-जाना लग गया। खादी और स्वदेशी को अपना लिया जो जीवनभर उनके साथ रहा। मखमली गद्दे छोड़कर धरती मां ही ओढ़ना-बिछौना बन गई।

किसान-मजदूर-कामगार की दिक्कतों के उत्थान हेतू जीवन समर्पण कर दिया फिर उन्होने जन कल्याण ही अपना लक्ष्य बना लिया और जीवन प्रयंत उसी में लगे रहे। सत्ता का कभी लोभ उनके मन में आया ही नहीं बल्कि संघर्ष ही उनकी जीवनधारा बन गई। यही संघर्ष उनकी प्रशासनिक कार्यशैली में स्पष्ट है। 'लोक-राज लोक-लाज से चलता है' यहीं नहीं 'बिजली पानी का प्रबंध, भ्रष्टाचार बंद' तथा 'प्रशासन आपके द्वार' व घुमंतु परिवारों के बच्चों को निशुल्क शिक्षा के साथ-साथ स्कूल हाजरी के भी पैसे मिलने लगे। 'कन्या दान' स्त्री शिक्षा पर ध्यान, स्नातक तक निशुल्क शिक्षा। एक स्त्री शिक्षित होने से दो परिवारों का शिक्षित होने की सोच, वृद्धावस्था सम्मान पैंशन, किसान का ऋण माफ, हर खेत को पानी, किसान के खेत के साथ लगे सड़क के वृक्षों में से किसान का आधा हिस्सा आदि अनेकों योजनाएं चालू भी की और उन्हे फलीभूत भी किया। उनकी योजनाओं का दूसरे राज्यों और केंद्र सरकार ने अनुकरण भी किया।

किसान मजदूर का बच्चा पढ़े, इसके लिए गांव-गांव में स्कूल खोल दिए, किसान की फसल मंडी तक पहुंचे, हर गांव पक्की सड़क से जोड़ दिया। किसान को उसकी फसल का उचित दाम मिले और समय पर मिले, हर छोटे-बड़े स्थान पर किसान मंडियों का जाल बिछा दिया। किसान-मजदूर का हर छोटे से छोटा दर्द उनका अपना था। गांवों में बाढ़ आ गई तो खुद कस्सी-तसला उठाकर देहात में पहुंच गए और आज उन्ही हर गांव में इर्द-गिर्द बने रिंगबांधों की बदौलत ही पूरा प्रदेश बाढ़ों की विभीशंका से बच गया।

आज भी जननायक चौधरी देवी लाल की दूर-अंदेशी कथनी को करनी में ढालने वाली सोच का सलाम करता है। वर्षा के अभाव में फसल बुआई में देरी हुई तो सरकारी ट्रैक्टरों की व्यवस्था हुई और सरसों की बुआई समय पर संभव हो सकी। वे बेशक चिर निंद्रा में सो चुके हैं लेकिन उनका संघर्ष का दिखाया रास्ता एक प्रशस्त भूमिका निभा रहा है।

हरियाणा के किसानों को देशभर से गन्ने के सर्वाधिक मुल्य दिलवाकर एक नई क्रांति का बीज बो दिया। 'सफेद क्रांति' के सूत्रधार बने। मिनी डेयरी योजना चालू करवाकर किसानों को खेती के साथ-साथ आमदन का एक नया साधन तलाश दिया, मधु मक्खी पालन, मुर्गी पालन, रेशम की खेती जैसी अनेकों योजनाएं लागू कर दी। गरीब मजदूर के घर पर भी उजाले के लिए एक बल्ब रोशनी की व्यवस्था करवा दी।

चौधरी देवी लाल के वक्त आलू की बेकदरी हो गई और किसान खेतों में ही दबाने को मजबूर थे क्योंकि उसकी खुदाई मूल्य भी नहीं मिल रहा था। किसान से 25 पैसे किलो खरीदा आलू दो सप्ताह में लाल पैक्ट में बंद टेलीविजन पर प्रचार की बदौलत 'हमको बिन्नीज मांगता' से 300 रूपये प्रति किलो बिकने लगा। चौधरी देवी लाल हरकत में आए और ईरान को सीधी बिक्री की व्यवस्था करवाई जिससे वहां के बड़े-बड़े ट्रक किसानों के खेतों में पहुंच गए और किसान अपनी फसल का उचित मुल्य हासिल कर सका। ऐसी सोच को क्यों न शतशत सलाम हों, तभी तो वे सत्ता के गलियारों में रहे या विपक्ष में, सदा जनता के दिलों पर राज किया और आज भी किसान की रूह पुकार-पुकार कर उन्हे याद करते हुए कहती है - उठ दर्द मंदा से दरदीया, उह तक अपना साम्राज्य।' दर्द बेइंतहा है और सुनने वाला कोई नहीं। बात भी मेरी सुन नहीं सकता और पूछता है वो कि आखिर मुद्दा क्या है?

लेखक आरंभ से ही एक प्रेरणादायक गीत का कायल रहा है - ''अपने लिए जीए तो क्या जीए, तू जी ए दिल जमाने के लिए'' फिर वह दौर आया कि एक संत सिपाही के साथ काम करने का अवसर मिला। अचानक वह दुनिया छोड़ गया तब आभास हुआ कि एक ऐसे इंसान के साथ काम कर रहे थे जो दूसरों के लिए जीता था। दीनबंधु सर छोटू राम भी सदैव यही कहते थे '' इस संसार में करोड़ों इंसान पैदा होते हैं और मरते हैं लेकिन जीना उसका सार्थक है जो दूसरों के लिए जीए।'' वास्तव में चौधरी देवीलाल एक संत थे। सत्ता में रहते हुए कभी गुमान नहीं हुआ, सत्ता चले जाने पर गम नहीं हुआ बल्कि प्रधानमंत्री की गद्दी मिली वो ताज भी श्री वी पी सिंह के सिर पर रख दिया। उनकी सोच गहरी थी कि वे बहुत सरल भाषा में सीधी बात करते थे इसीलिए लोग उन्हे ताऊ कहते थे।

'k"k i t&2 ij

शेष पेज–1

आज किसान, मजदूर, मजलूम के साथ-साथ जय जवान-जय किसान के पक्षधर चौ0 देवीलाल को सैनिक भी याद कर रहे हैं। चौ0 देवीलाल और सैनिक में एक समानता यह भी है कि सहज में मांग नहीं करता और दोनों कांग्रेस के सताए हुए हैं। चौ0 देवीलाल ने संयुक्त पंजाब में मुख्य पार्लियामैंटरी सचिव होते हुए प्रताप सिंह कैरों मंत्रीमंडल को ठोकर मार दी थी लेकिन दिल में कुछ मलाल नहीं रखा। अपनी बेटी की शादी में प्रताप सिंह कैरों जिसको वे भाई मानते थे न्योता देते हुए कहा कि वे बेटी के ताऊ को बुलाने आए हैं, पंजाब के मुख्यमंत्री को नहीं।

इस समय ''जय जवान-जय किसान'' एक नारा बनकर रह गया है या यह माने कि इतिहास के कोने में दफन हो चुका है। आज सैनिक के साथ-साथ किसान की सुध लेने वाला कोई नहीं। अब की बात ही कर लें किसान का धान समर्थन मुल्य से भी कम बिक रहा है जबकि समर्थन मूल्य किसान की लागत कीमत भी पूर्ण नहीं करता। किसान के खेत को तो सदा ग्रहण ही लगा रहता है - कभी सुखा, कभी डूबा, कभी गर्ज तो कभी मर्ज से कभी निकल भी आए तो कर्ज के मकड़जाल से बचाने वाला कोई नहीं। इतिहास गवाह है जहां सैनिक की अनेदखी होगी वहां राष्ट्र की सरहदें सुरक्षित नहीं होगीं। जहां किसान की अनदेखी होगी वह राष्ट्र कभी विकास नहीं कर सकता। उन्होने चाणक्य विचारधारा ''राजन सैनिक परिवारों की भलाई सोचो सरहदें स्वतः सुरक्षित हो जाएगीं, जिस दिन सैनिक को मांगना पड़ गया बर्बादी की कहानी शुरू समझो'' को मूलमंत्र मानकर सैनिक के साथ किसान का नाम जोड़ दिया- उनके शासनकाल में कृषि विकास की अनेकों योजनाएं शुरू हुई। किसान की दुर्दशा से वे द्रवित हो उठते और उन्हे कभी बिजली, पानी का टोटा ना आने दिया। किसान के खेत के साथ लगते सरकारी पेड़ों में भी किसान को हिस्सा दिया क्योंकि उनकी छाया से कृषि उत्पादन में कमी आती है। कृषि में विविधतता, बागवानी तथा नकदी फसलों को प्रोत्साहन शुरू किया जो बाद में राष्ट्रीय स्तर पर लागू हुई। जब चौ0 देवीलाल ने किसान के ऋण की माफी की बात की तो सत्तासीन सरकार ने मजाक उड़ाया लेकिन मन, कर्म, वचन के पक्के ताऊ ने सत्ता में आते ही कर दिखाया। विरोध भी हुआ कि इससे बैंकों को क्षति होगी लेकिन उनकी सोच और नीयत रंग लाई। योजना सफल हुई और बाद में इस योजना को भी राष्ट्रीय स्तर पर लाया गया।

अपनी निजी जमीन तकरीबन 2000 एकड़ सर्व प्रथम मुजारों को दान दे दी। उन्होने सदा गरीब किसान, मजदूर, मजलूम की लड़ाई लड़ी व अपने असूल के साथ कभी समझौता नहीं किया- श्री वीपी सिंह कसौटी पर खरे नहीं उतरे तो चोधरी देवीलाल ने भी अपने हाथ खींच लिए। उड़ीसा में अकाल पड़ा, हरियाणा का मुख्यमंत्री होते हुए भी कालाहांडी पहुंचकर वहा की परिस्थितियों के अनुरूप सरकंडे से फर्नीचर बनाने के कारीगर हरियाणा से ले गए और वहां के लोगों को प्रशिक्षण भी निशुल्क दिया व फर्नीचर अनाने की तकनीक तथा यहां से ट्रैंनिग देने वाले कारीगर वहां भेज दिए और एक बड़ी खेप भी खरीद ली जो हरियाणा की सभी पंचायतों को दिए गए। उनका मानना था कि किसी को भीख नहीं सीख दो ताकि वह कमाकर खा सके और आने वाले समय में भी उसके हाथ में हुनर हो।

जिस गिरते लिंग अनुपात के लिए भारत सरकार आज चिंतित हो रही है, चौधरी साहब ने 'कन्या दान' आज से 40 वर्ष पूर्व देकर समाधान दे दिया था। स्त्री शिक्षा पर उन्होने विशेष बल दिया था। मुफत वर्दी, पाठन सामग्री के साथ-साथ आठवीं तक निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान चौधरी देवी लाल ने दिया था ताकि शिक्षित नारी, घर परिवार को सुचारू रूप से चला सके, बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दे सके। उनका कथन था कि नारी शिक्षा से दो परिवार शिक्षित होते हैं। मुफ्त साईकिल उन्ही के सपूत चौधरी औमप्रकाश चौटाला की देन है तथा घुमंतू कबीलों के परिवारों के बच्चों को स्कूल हाजरी का प्रतिदिन एक रूपया चौधरी साहब ने दिया जो चौ0 औमप्रकश चौटाला जी ने मंहगाई के मद्देनजर पांच रूपये कर दिया।

छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने हेतू पंजाब विधानसभा में भू-पट्टेदारी अधिनियम 1953 बनवाकर मुजारों की बेदखली को रोका गया। इस अधिनियम के द्वारा 6 साल से भूमि काश्त कर रहे मुजारों को अदालत के माध्यम से आसान किश्तों पर जमीन खरीदने का अधिकारी दिलाकर मालिकाना हक भी दिलवाया। सरकारी कोष से जारी धनराशी के सदुपयोग व ग्रामीण समाज के समुचित विकास के लिए ग्रामीण जनता द्वारा एकत्रित धनराशी पर सरकारी खजाने से दो या तीन गुणा अनुदान दिलाकर लगातार मैचिंग ग्रांट योजना शुरू करने व राज्य कोष से जारी धनराशी को सीधे पंचायत व ब्लाक स्तर पर खर्च करने के पारदर्शी व स्पष्ट प्रावधान लागू किए।

उन्होने साईमन कमीशन के विरूद्ध सत्याग्रह करके जेल की सलाखें से दोस्ती की थी वह दोस्ती 1985 के न्याय युद्ध तक बरकरार रही। जब कभी प्राकृतिक आपदा ओलावृष्टि, बाढ़ व तुफान आता तो वे सत्ता में होते हुए भी किसानों के खेत में उनके दुखों को बंटाने में अपना धर्म मानते थे। उस शख्सियत ने लगभग सात दशक देश के राजनीतिक मानचित्र पर ऐसी इबारत लिखने में बिताए, जिसमें शोषण के खिलाफ एक संपूर्ण जिहाद की बात थी, जिसमें हर हाथ के लिए काम, हर पेट के लिए रोटी, हर खेत के लिए पानी, हर घर के लिए रोशनी और हर बसर के लिए एक छत का सपना था।

ताऊ देवीलाल का अटूट विश्वास वर्गहीन, जातिवाद धर्मविहिन, भेदभाव रहित और गुटविहिन लोकतांत्रिक व्यवस्था

में था। उनकी राजनीति केवल जनहित पर आधारित थी। उनका प्रयास था समाज का शोषित वर्ग, शोषण मुक्त हो। ताऊ देवीलाल ने राजनीतिज्ञों के लिए लोकलाज के आदर्श के अंतर्गत आचार संहिता लाने पर बल दिया ताकि राजनीति में अनैतिकता को आने से रोका जा सके। उन्होने राजनीति को जीवन मूल्यों तथा जीवनादर्शों से जोड़ने का यत्न किया और वे चाहते थे कि जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा जनहित कार्य न करने पर आम जनता को उन्हे वापिस बुलाने का अधिकार का सर्वप्रथम नारा दिया।

चौधरी साहब आरंभ से ही न्याय के पक्षधर रहे। घर पर भी जब उनके साथ न्याय नहीं होता था तो पारिवारिक मंच पर बचपन में ही प्रभावी ढंग से आवाज उठाते थे। इसी कारण घर वाले उन्हे रूलिया कह कर पुकारने लगे। इसी रूलिये ने रौला मचाकर 1977, 1989 व 1996-97 में काग्रेस को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाया था। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में विशेषकर गरीब, पिछड़े व शोषितों को सम्मानजनक स्थान दिलवाने के लिए प्रयासरत रहे। लाला लाजपतराय के नेतृत्व में निकाले गए साइमन विरोधी जलूस में शामिल होने के लिए वे गांव से पैदल चल दिए थे। सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्हे मुलतान जेल की हवा खानी पड़ी थी।

पंजाब से हरियाणा के हिस्से का पानी लाने का मुद्दा तो राजनेता सत्ता सुख भोगने के लिए छेड़ते हैं परंतु चौ0 देवीलाल ने सबसे पहले 6 नवंबर 1937 को भाखड़ा नहर परियोजना मुद्दे को उठाया था। संयुक्त पंजाब में हिंदी भाषा क्षेत्र की न तो सरकारी सेवाओं में नुमाइंदगी थी और ना ही विकास कार्यों में उसका वांछित हिस्सा था। एक तरफसे वर्तमान हरियाणा प्रदेश के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा था। उन्होने हरियाणा बनने का संकेत 14 मार्च 1961 को पंजाब विधानसभा में बोलते हुए कर दिया था कि यदि हिंदी भाषी क्षेत्रों के साथ इसी तरह सौतेला व्यवहार होता रहा तो इस क्षेत्र को पंजाब से अलग करना पड़ेगा। वे लगातार हरियाणा के अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहे।

संत फतेहसिंह ने पंजाब सूबा न बनने की सूरत में अकाल तख्त पर आत्मदाह का ऐलान किया तो उस समय हरियाणा के हितों के सजग प्रहरी चौ0 देवीलाल अस्पताल में थे। डाक्टरों ने उन्हे हस्पताल में रहकर ईलाज करवाने की सलाह दी परंतु अमृतसर गए। डाक्टरों से उन्होने कहा कि मेरे मरने से हरियाणा बचता है तो इससे बड़ा परमार्थ कोई और नहीं हो सकता। इस तरह उनके नेतृत्व में संघर्ष के परिणामस्वरूप हरियाणा प्रदेश अस्तित्व में आया था।

आपातकाल में 19 माह की भारी जेल यातनाएं सहकर वे 26 जनवरी 1977 को जेल से रिहा हुए। बिखरे विपक्ष को इकट्ठा किया तथा जनता पार्टी के गठन में विशेष भूमिका निभाई। 23 जून 1977 को हरियाणा के पांचवे मुख्यमंत्री बने। राष्ट्रहित में किसी भी राजनैतिक व सामाजिक मुद्दे पर वे अपने विरोधियों तक से भी सलाह मश्विरा करने में संकोच नहीं करते थे। इसीलिए उन्होने सतलुज यमुना लिंक नहर के मुद्दे पर 14-08-1985 को अपने तमाम विधायकों के साथ विधानसभा से इस्तिफा दे दिया। तत्पश्चात कांग्रेस की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ जींद में एक ऐतिहासिक रैली करके प्रथम न्याय युद्ध की शुरूआत की और वर्ष 1987 में विधानसभा की 90 सीटों में से 85 सीटें जीतकर नया रिकार्ड स्थापित करके दूसरी बार मुख्यमंत्री बने।

हरियाणा को न्याय दिलाने व शहीदों को सम्मान देने के लिए 23 जनवरी 1987 को रोहतक में चौ0 देवीलाल के नेतृत्व में सम्मेलन हुआ जिसकी हाजरी का रिकार्ड अब तक नहीं टूटा है। सरकार में आने पर अपनी कलम से रावी व्यास का पानी हरियाणा में लाने की योजना बनाई। सन 1987 में लोकदल भाजपा सरकार बनी। चौ0 देवीलाल ने एक कलम से कर्ज माफ कर दिए, उन्होने भू मालिकों के शोषण से मुजारों को निजात दिलाई।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। अतः लेखक एक उदार हृदय एवं महान आत्मा - ताऊ देवीलाल को उनके 104वें जन्म दिन (25 सितंबर 1914) पर नत मस्तक होकर प्रणाम करता है।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तथा अगस्त-सिंतबर 1999 से 6 सिंतबर 2001 तक चौधरी साहब के प्रशासनिक अधिकारी तथा पुलिस प्रमुख (गुप्तचार विभाग) रहे हैं।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

अमृत और मृत्यु दोनों ही इस शरीर में स्थित हैं। मनुष्य मोह से मृत्यु को और सत्य से अमृत को प्राप्त होता है। –वेद व्यास

मौखिक इतिहास द्वारा चौ0 छोटूराम के जीवन पर प्रकाश

– सूरभान दहिया

आधुनिक इतिहास जनमानस का इतिहास है, उसके संघर्ष का उल्लेख है तथा उसके उत्थान–पतन की प्रक्रिया है। जनमानस के कल्याण हेतू जिन्होंने संघर्ष करके उसका नेतृत्व किया, वे इतिहास पुरूष हो गये। चौ. छोटूराम भी ऐसे ही संघर्ष पुरूष थे जिन्होंने किसानों के कल्याण हेतु अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया तथा किसान को शोषण से मुक्ति दिलाकर उसे सुखी जीवन व्यतीत करने का अधिकार दिया। अतएव वे आज तक किसानों के दिलों में समाये हुये है जबकि वे हमसे कोई 72 वर्ष हो गये है, बिछुड गये थे 2020 में उनकी 75वीं पुण्य तिथि पर किसान समाज उनको भावभिनी, श्रद्धाजंलि देगा तथा लोक सभा चुनाव में वह भावी भारत की रूपरेखा प्रमाणित करेगा। इस इतिहासकार पुरूष के सम्बन्ध में अभी तक जितना लिखा जा चुका है, उससे ज्यादा तो किसानों की जुबान पर है। इतिहासकार इसलिये मौखिक इतिहास को अब ज्यादा महत्वपूर्ण मानते है। अतएव मैं अपना एक नैतिक दायित्व समझ रहा हूँ कि मैं चौ. छोटूराम के जीवन के सम्बन्ध में जो किस्से हमारे बुजुर्गो को स्मरण है, उनका लेखन किया जाये। इस विषय पर हम संकलन कर चुके है तथा पाठकों से अनुरोध है कि वे इस काम में हमारा सहयोग करें।

पाठकों की रूचि होगी की चौ. छोटूराम के जीवन के सम्बन्ध में कुछ मौखिक विवरण यहां पर दिया जायें। आप चौ. हरद्धारी लाल को जानते ही है वे हरियाणा के शिक्षा मन्त्री बने तथा बाद में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के उपकुलपति भी रहें हैं उन्होंने एक बार मुझे बताया था – "मैं पंजाब सरकार में पी.सी.एस. के अन्तर्गत राजस्व अधिकारी के रूप में कार्यरत्त था"। मैं अगस्त 1941 में एक विशेष डयूटी के तहत राजस्व व तकावी लेखा निरीक्षण पर था। इस प्रयोजन हेतू मुझे तलागंग तहसील मुख्यालय पुहचना था, यह तहसील जिला कैम्बलपुर में पड़ती थी। इस तहसील मुख्यालय पर जाने के लिये मुझे एक नाले को पार करना था। इस नाले को पार करने के लिये किसानों ने नाव आदि की व्यवस्था कर रखी थी जिसका वे किराया लेते थे। मैं उनकी नाव में दूसरे किनारे पर जाने के लिये बैठ गया। जब मैं दूसरे किनारे पहुंचा तो उनको किराये के पैसे देने लगा, तो एक किसान ने मेरे से मेरे जिले का नाम पुछ लिया। जब मैंने अपना जिला रोहतक बताया, तो वे सभी एक आवाज में बोले – "छोटूराम का जिला" और मेरे से किराये के पैसे नही लिये। वे बोले' रोहतक की पाक मिट्टी से चौ. छोटूराम जन्मे जो हमारा मसीहा बन गये। उस मिट्टी को सलाम, वहां के अवाम को सलाम। हम वहां तो ना जा सके पर उस मिट्टी की एक रूह के सामने खड़े है। हमारा जीवन सफल हो गया, चौधरी को याद कर लिया, आज का दिन हमारे लिये पाक हो गया। फिर उन्होंने आगे कहा–कहा "जनाब और कुछ खिदमंत करने का मौका दिजिए हमें।"

दिसम्बर 1975 की बात है कि मैं अपने मामा के यहां गांव लगरपुर (बादली के बिल्कुल पास) गया हुआ था। एक नोरे में कुछ लोग हुक्के पर बैठक में थे यहां बातों–बातों में चौ. छोटूराम का जिक्र आ गया। मैंने एक जिक्र पर एक टिप्पणी दे दी। "आपने तो (गुलिया खाप) 1920 के पहले चुनाव में चौ. छोटूराम जी को हरा दिया था" कुछ देर यह सुन कर बैठक में सन्नाटा छा गया। फिर मामा राजे ने सन्नाटे को तोड़ा – "बात तै बेटे या ऐ थी, पर खाप है बहुत बड़ी गलती हो गई थी। चौधरी के हारने के बाद गुलिया खाप के गाम–गाम में काफी पछतावा था। बात हाथ से निकल गई थी। – सालाहवास के बनियों ने चालाकी से गलत अफवा फैला दी थी और चौधरी साहिब 20–30 वोट से हार गये थे। जाट करके पछताया करे सै। खैर, दुःखी मन से गुलिया खाप की एक बैठक हुई और यह फैसला हुआ कि खाप रोहतक जाकर चौधरी साहिब से उस बड़ी गलती के लिये माफी मांगें। खाप का एक डेलिगेशन रोहतक चौ. छोटूराम से मिलने पहुंचा। उनसे मिलकर गुलिया खाप ने अपनी गलती की माफी मांगी। चौधरी साहिब ने खाप डेलिगेशन को कहां – "यदि तुमने गलती मान ली है तो मैं समझो जीत गया।" मैं यह बात किसान भाईयों को समझाने की कोशिश कर रहा हूँ – "तुम अपने दुश्मन को पहचान लो।" उसके बाद किसानों ने कभी भी चौ. छोटूराम को हारने नही दिया। साजिस तो उनको हरा देने की कई बार बाद में भी होती रही है।

1990 में मैं गुरनाम सिंह कमीशन में कार्यरत्त था और हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ़ में किसी कार्यवश – चौ. रामनारायण सिंह, डी.सी. (सेवानिवृत) आये, वे भिवानी से सांसद भी थे। किसी की प्रतीक्षा में थे। तो मैनें उनसे चौ.छोटूराम जी के बारे में कुछ जानना चाहा, उन्होंने बताया कि उन जैसा निर्भीक, दूरदर्शी, दक्ष एवं किसान की हितैषी राजनीतिक नेता कोई नही हो सकता। उन्होंने लाहौर का एक किस्सा सुनाया। लाहौर में पढ़ने वाले हरियाणा क्षेत्र के लड़को की एक विधार्थी सभा थी जिसमें अध्यक्ष चौ. मनीराम गोदारा (चौ. बंसीलाल के मंत्री मण्डल में गृह मंत्री बने) थे। इस सभा ने निर्णय लिया कि डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के हाल में हरियाणा क्षेत्र के विधार्थी को चौ. छोटूराम सम्बोधित करें। इसके लिये चौधरी साहीब से अनुमति लेकर तिथि व समय निश्चित कर लिया। जब उसकी जानकारी डी.ए.वी. कॉलेज के छात्रों को मिली तो उन्होंने ने इस मिटिंग को विफल करने की ठान ली। चौ. मनीराम गोदारा घबरा गये तथा अपने साथियों के साथ चौधरी साहिब से मिलने 'शक्तिभवन' – (चौधरी साहिब का निवास) पहुंचे। गोदारा जी ने इस साजिश की जानकारी चौधरी साहिब को दी। चौधरी साहिब ने कहा – "घबराने की कोई बात नहीं" । तुम हाल के सभी दरवाजो पर पहलवान बच्चों को खड़ा कर देना और जब मैं हाल में पहुंचु तो कुंडी लगा देना, कुछ पहलवानो को हाल के बीच में बैठा देना। योजना अनुसार ऐसा हुआ

मनुष्य की बुराइयां दीर्गजीवी और अच्छाईयां अल्पायु होती हैं। –शेक्सपीयर

जो कि चौधरी साहिब बोलने लगे तो शहरी बच्चों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। चौधरी साहिब ने उन्हें कहा "मैं जो काम हाथ में लेता हुं वह पुरा करके ही दम लेता हूँ" मैं यह बोलने आया हूँ और बोले बैगर वापिस नहीं जाऊंगा। दो मिनट का समय आपको देता हूँ उस बीच कुछ बच्चे बाहर जाने के लिये उठे – पर बाहुबल के पहलवानो ने थोड़ा–सा सबक सिखा दिया। दो मिनट में ही वातावरण शांत हो गया। चौ. छोटूराम कोई एक घन्टा वहां बोले अन्त में उन्होंने शहरी बच्चों को स्टेज पर आने को कहां। एक शहरी बच्चा स्टेज पर आया और अपनी बात रखते हुये बोला – "चौधरी साहिब! हमें माफ कर दिजिये आपको सुना, तथ्यो की जानकारी मिली, आपकी सारी बातों में वजन था। हमें गुमराह किया था"। मैंने उस छात्र नेता का नाम जानना चाहा तो चौ. रामनारायण सिंह ने कहा – "इतना तो मुझे अब याद नहीं, पर वाक्य। यहीं था"।

चौ. छोटूराम अक्सर रोहतक व गढ़ी सांपला आते रहते थे। लाहौर से उनका प्रोग्राम पहले ही पहुंच जाता था। 1942–43 की बात है कि जब वे मंत्री थे तो एक दिन वे अपनी जन्म स्थली गढ़ी सांपला पहुंचे। मेरे गांव निलौठी से उसकी दूरी 6–7 कोस दूर है। हमारे गांव के चौ. धर्म सिंह ने उसी समय एफ.ए. (12वीं क्लास) पास कर ली थी। चौ. छोटूराम ने गांव–गांव में सूचना दे रखी थी कि जो भी देहांत का बच्चा दसवीं व उससे ऊपर पढ़ा है तो मुझ से नौकरी के लिये सम्पर्क साधे। चौ. धर्म सिंह भी चौधरी साहिब से नौकरी पाने के लिये उनके गांव गढ़ी सांपला मिले। चौधरी साहिब ने उन्हें नायब–तहसीलदार के पद पर नियुक्त करने का ऑफर दे दिया।चौ. धर्म सिंह को किसी ने बहका दिया कि वह बड़ा तहसील दार बनने के लिये अडे रहे। चौ. छोटूराम ने उसे बहुत समझाया कि अभी नायब तहसीलदार का पद खाली है उससे अपनी नौकरी शुरू करें पर वह नहीं माना, और बैठे लोगों ने भी चौ. धर्म सिंह को काफी समझाया। चौधरी साहिब गुस्से में आ गये और कहां कि तुम फिर नौकरी के लिये मेरे पास मत आना। आगे उन्हें कोई नौकरी नहीं मिली। याद रहे चौ. रामनारायण सिंह व चौ. हरफूल सिंह को शुरू में नायब तहसीलदार के पद पर ही दीनबंधु चौधरी छोटूराम जी ने नियुक्त किया था जो बाद में आई.ए.एस. बने और अन्त में पलवल जिले के गांव में सुनी दो पक्तियां –

"मंदिर में होती आरती राधे–श्याम की।
खेत–खलियान में होती आरती छोटूराम की।।

दीनबंधु वंदनीय है और सदैव संगीतवंद होते रहेगें। महान नेता वहीं जो लोकगीतों में समा जायें।

विकास पुरूष चौ0 बंसीलाल

– सूरज सूजान

चौ. बंसीलाल हरियाणा के तीसरे मुख्यमंत्री थे। उनको हरियाणा के निर्माता व विकास पुरूष के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म गांव गोलागढ़, जिला भिवानी, हरियाणा में एक साध ाारण किसान परिवार में 26 अगस्त 1927 को चौ. मोहर सिंह के घर में हुआ। उनकी प्राथमिक पढ़ाई गांव के स्कूल में ही हुई थी। घर के कामकाज में व्यस्त होने के कारण बी.ए. की पढ़ाई उन्होंने प्राइवेट तौर पर की थी। उच्च शिक्षा उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय लॉ कालेज जालन्धर से सन् 1956 में एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की। चौ. बंसीलाल ने अपना जीवन एक वकील, सामाजिक कार्यकर्त्ता व राजनीतिज्ञ के तौर पर भिवानी से ही शुरू किया। सन् 1943–44 में लोहारू प्रजामंडल के सचिव बने व स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। वह सन् 1957–58 में भिवानी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे। सन् 1958–62 तक पंजाब कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे व हिसार जिला कांग्रेस के प्रधान भी रहे। वह आम जनता व किसानों के सर्म्पक में रहते थे और उनकी समस्याओं को समझते थे।

उनकी विशेष उपलब्धियों में उनका हरियाणा राज्य में कई बार मुख्यमंत्री बनना व केन्द्र सरकार में मंत्री बनना रहा, जो इस प्रकार है :–

हरियाणा के मुख्यमंत्री

चौ. बंसीलाल सन् 1968, 1972 और 1996 में चार बार हरियाणा प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। हरियाणा प्रदेश नवम्बर 1, 1966 को बना था और पहले मुख्यमंत्री भगवत दयाल शर्मा व दूसरे मुख्यमंत्री राव बिरेन्द्र सिंह थे, चौ. बंसीलाल तीसरे मुख्यमंत्री बने, लम्बी अवधि तक उनका कार्यकाल रहा था। पहली बार 31 मई 1968 से 13 मार्च 1972 तक दूसरी बार 14 मार्च से 30 नवम्बर 1975 तक, तीसरी बार 5 जून 1986 से 19 जून 1987 व चौथी बार 11 मई 1996 से 23 जुलाई 1999 तक। वह राज्य विधान सभा में सन् 1967, 1968, 1972, 1986, 1991, 1996 व 2000 में प्रत्याशी चुने गए।

संसद सदस्य व मंत्री

चौ बंसीलाल कई बार संसद सदस्य व केन्द्रीय मंत्री भी रहे। राज्यसभा सदस्य 1960–66 व 1976–80 तक रहे। रक्षामंत्री दिसम्बर 1975 से मार्च 1977 तक रहे। वह रेल मंत्री व ट्रांसपोर्ट मंत्री दिसम्बर 1984 से मई 1986 तक रहे। वह पार्लियामैंट व पब्लिक कमेटी के सन् 1980–82 तक चेयरमैन रहे व सन् 1982–84 तक ऐस्टीमेट कमेटी के चेयरमैन रहे। वह लोकसभा के सदस्य सन् 1980–84, 1985–86 व 1989–91 तक रहे।

हरियाणा प्रान्त में विकास कार्य

जब हरियाणा प्रान्त नवम्बर 1, 1966 को पंजाब से अलग हुआ तो उस समय यह एक पिछड़ा क्षेत्र था। आधे उत्तरी क्षेत्र में तो नहरें थी और जलवायु भी आर्द्र थी, मिट्टी भी उपजाऊ थी, जिससे फसल उत्पादन अच्छा था। परन्तु आधा दक्षिणी हरियाणा सूखा था, नहरें नहीं थी, पानी के साधन नहीं थे, जलवायु शुष्क थी, रेत के टिब्बे थे व आंधिया चलती थी और खेती वर्षा पर ही

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

निर्भर थी व फसल उत्पादन बहुत कम होता था। इस तरह किसानों की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी। अन्य संसाधनों में भी हरियाणा क्षेत्र बहुत पिछड़ा हुआ था। इस तरह हरियाणा को चहुंमुखी शीघ्र विकास की आवश्यता थी। ऐसे में चौ. बंसीलाल जैसे कर्मठ, दृढ़ निश्चयी, मेहनती, ईमानदार, कुशाग्र बुद्धि, साहसी, दूरदर्शी व कुशल प्रशासन की संस्कृति की नीवं रखी।

चौ. बंसीलाल को ऐसे नेतृत्व का वहन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने एक स्थाई सरकार व प्रशासन का गठन किया। पार्टी की तरफ से पूरा समर्थन मिला व केन्द्र सरकार से पूरा सहयोग मिला। राज्य के कांग्रेस अध्यक्ष चौ. सुल्तान सिंह व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का उनको पूरा समर्थन था। सन् 1968 से सन् 1975 तक चौ. बंसीलाल ने विकास कार्यों की झड़ी लगा दी उन्होंने हर क्षेत्र में काम को गति दी। चौ. बंसीलाल ने मूलभूत समस्याओं को समझा। उनमें निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने हर विभाग को नई विकास योजनाओं को तैयार करने को कहा और बजट का प्रबन्ध किया। सबसे पहले उन्होंने हर विभाग में आवश्यकतानुसार अच्छे कर्मठ व्यक्तियों की भर्ती की। पुलिस विभाग को चुस्त–दुरूस्त बनाया और सभी सुविधाएं प्रदान की ताकि राज्य में कानून व्यवस्था ठीक हो और जनता निडर होकर कार्य कर सके। उन्होंने हर शहर व गांव को सड़क से जोड़ा, रोड़वेज विभाग को आधुनिक बनाया, नई बसों का बेड़ा तैयार कराया व सभी जगह आधुनिक बस अड्डे बनवाकर मिसाल कायम की। गांव में बिजली का प्रबन्ध किया, हर गांव में पीने के स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य सेवाएं व विद्यालयों का प्रबंध किया। गलियां पक्की कराई गई। खेतों में पूरा पानी पहुंचाने के लिए नहरों का प्रबंध किया व नहरें व नालियां पक्की कराई गई।

दक्षिणी हरियाणा के टीलों में पानी पहुंचाने के लिए लिट सिंचाई योजना बनाई। इसमें अमेरिका से पढ़े इंजीनियर श्री के.एस. पाठक का विशेष योगदान रहा। भाखड़ा कैनाल से लिट योजना से लगभग सौ फुट पानी ऊंचा उठाया गया व सिवानी जुई, लोहारू, जे.एल. नेहरू आदि नहरों से ऊंचे टीबों के क्षेत्र में लाखों एकड़ सूखी रेतीली जमीनों की सिंचाई करके भरपूर फसल उत्पादन लिया। हर गांव में नलकों द्वारा पीने का स्वच्छ पानी पहुंचाया। ऊंचे–नीचे खेतों में छिड़काव सिंचाई का प्रबंध कराया।

चौ. बंसीलाल हर काम को तय सीमा में करते थे उन्होंने जो भी विकास कार्यों की नींव रखी उसको पूरा करने का समय भी देते थे और तय समय में काम पूरा होने पर उद्घाटन भी करते थे। इस तरह उन्होंने सभी भवनों, रेस्ट हाऊस, रिहायसी कालोनी, नहरों व सड़कों पर पुल आदि बनवाए। उन्होंने पंचकूला से अम्बाला सड़क को छः महीने में पूरा करा दीया था ताकि लोगों को अम्बाला से सीधा चण्डीगढ़ का रास्ता मिले और पंजाब के उग्रवाद का सामना ना करना पड़े। वह जब चण्डीगढ़ से दिल्ली जाते थे तो फाइलें कार में रखवा लेते थे और आते–जाते समय सभी फाईलें निपटा देते थे ताकि सरकारी काम ना रूके। वह आधी रात तक भी सरकारी काम निपटाते थे।

उन्होंने रिकार्ड समय में हरियाणा में हर जिले में जगह–जगह टूरिस्ट कॉम्पलैक्स बनवाए। कृत्रिम व प्राकृतिक झीलों का सौन्दर्यकरण किया। उनमें किस्तियां चलवाई ताकि पर्यटन को बढ़ावा मिले। कई जगह पशु व पक्षी विहार भी बनवाएं ताकि जनता उन्हें नजदीक से निहार सके। यह मॉडल अपनी तरह का पहला था और कई राज्यों ने इसको अपनाया। उनके अधिकारी श्री एस.के. मिश्रा ने इस कार्य में बड़ा योगदान दिया था।

चौ. बंसीलाल ने हिसार शहर को विकसित करने में विशेष रूचि दिखाई। उन्होंने फौजियों के लिए डिफेंस कॉलोनी बनवाई। चण्डीगढ़ की तरज पर मिनी सचिवालय व कोर्ट परिसर बनवाएं। शहर की सड़के चौड़ी करवाई गई, पार्कों व खेल स्टेडियम का सुधार किया। बीज फार्म, एग्रो इण्डस्ट्री का विकास हुआ। हिसार में एक आदर्श ऑटो मार्किट बनवाई जहां हर तरह की दुकानों की सुविधा दी गई व हजारों लोगों को रोजगार भी मिला।

चौ. बंसीलाल ने कृषि को बढ़ावा देने के लिए हिसार स्थित हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का आधुनिकरण किया। यह विश्वविद्यालय 2 फरवरी 1970 को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय से अलग हुआ था। चौ. बंसीलाल ने अपने सेवानिवृत वित्त सचिव श्री ए. एल. लेचर को उप–कुलपति बनाया। वे बड़े कर्मठ व दूरदर्शी व्यक्ति थे। चौ. साहिब ने उन्हें कहा कि बजट खूब मिलेगा और विश्वविद्यालय को विश्व स्तर का बनाओं । इस विश्वविद्यालय में कृषि कॉलेज व पशुपालन, पशु चिकित्सा कॉलेज व गिरी सेन्टर, प्रशासन भवन, के अलावा इंजीनियरिंग कॉलेज, बेसिक विज्ञान कॉलेज, होम साईस कॉलेज, स्पोर्टस कॉलेज, प्रशासन भवन, नेहरू पुस्तकालय, गांधी भवन, इंदिरा गांधी ऑडीटोरियम बनवाए गए। प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह को बोर्ड का सदस्य बनाया और उनके नाम पर जूनियर वैज्ञानिकों के लिए डा. रामधन सिंह भवन बनाया। किसानों की सेवा के लिए हर जिले में कृषि ज्ञान केन्द्रो की स्थापना कराई गई। कृषि वैज्ञानिकों की भर्ती कराई गई और हरियाणा में कृषि क्रांति का आह्वान किया।

वैज्ञानिकों ने भी भरपूर काम किया। हर फसल की नई उत्तम प्रजातियां विकसित की व नई तकनीकें विकसित की। कृषि वैज्ञानिक किसानों के खेतों में जाकर ये जानकारी देते थे और सरकार की तरफ से सभी सुविधाएं किसानों को मिलती थी। इस तरह हरियाणा कृषि उत्पादन में नये आयाम छूने लगा। हर फसल गेहूं, जौ, मक्का, धान, बाजरा, कपास, दलहन,, तिलहन, गन्ना, चारा आदि फसलों में अत्याधिक उत्पादन होने लगा। इससे किसानों की आर्थिक अवस्था में सुधार हुआ और खुशहाली आई व हरियाणा का किसान देश में सबसे प्रगतिशील कहलाया। हरियाणा का खाद्यान लगभग दस गुणा बढ़ गया। कृषि वैज्ञानिकों को इन सफलताओं के लिए अवार्ड भी मिले। गेहूं उत्पादकता में हरियाणा अग्रसर राज्य बन गया। हमारी गेहूं की टीम को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की तरफ से भारत में 'बेस्ट टीम' का अवार्ड सन् 1997 में मिला व साथ ही हमारे विश्वविद्यालय को 'बेस्ट कृषि अनुसंधान संस्थान' का अवार्ड मिला, इससे विश्वविद्यालय की विश्व भर में सराहना हुई।

चौ. बंसीलाल ने गीता की नगरी कुरूक्षेत्र का भी काफी विकास किया। श्री कृष्ण संग्रहालय को आधुनिक बनवाया। ब्रह्मसरोवर का सौन्द्रर्यकरण कराया। वहां पर अपने राजनीतिज्ञ रहनुमा व दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री रहे माननीय गुलजारी लाल नन्दा की आदम कद मूर्ति लगवाई। कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय का भी विकास कराया।

चौ. बंसीलाल को इन सब विकास कार्यों के लिए कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय ने इनको डॉक्टर ऑफ लॉ की उपाधि से सम्मानित किया व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने उनको डॉक्टर ऑफ साईस की उपाधि से अलंकृत किया।

चौ. बंसीलाल ने अन्य बहुत विकास कार्य किए। रोहतक में महर्षि विश्वविद्यालय की स्थापना की, मेडिकल कॉलेज का विस्तार कराया गया व सभी सहुलियतें उपलब्ध करवाई गई। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण बनाकर शहरों में रियाहशी सैक्टर व समुदाय केन्द्र बनवाए। दिल्ली में हरियाणा भवन बनवाया, गुडगांव में मारूति इंडस्ट्री भी लगवाई जिससे लाखों लोगों को रोजगार मिला व हरियाणा में हर घर में समृद्धि आई व हर हरियाणवी गर्व महसूस करने लगा। चौ. बंसीलाल ने हरियाणा को कृषि में और समृद्ध राज्य बनाने के लिए सतलुज यमुना नहर लिंक के लिए बहुत प्रयास किया।

केन्द्र सरकार में रहकर चौ. बंसीलाल ने सेना में आधुनिकरण किया, रेल सेवाओं में सुधार व आधुनिकीकरण किया। भिवानी रेलवे स्टेशन को बहुत सुन्दर बनवाया। ट्रांस्पोर्ट मंत्री रहते हुए देश में सड़कों का सुधार कराया। गुजरात में विशेषकर फोरलेन, नया हाईवे अहमदाबाद से बड़ोदरा तक बनवाया।

वायदे के पक्के

चौ. बंसीलाल अपने वायदे के पक्के थे। जिस बात की हां कर लेते थे उसे पूरा करते थे किसानों की कोई भी बिजली, पानी की मांग होती थी, उसे पूरा करते थे, हर घर में व हर खेत में पानी व बिजली की जरूरत पूरी करते थे। जब चौ. बंसीलाल ने लिट सिंचाई परियोजना से भिवानी, महेन्द्रगढ़ रेवाड़ी के हल्कों में मीठा पानी पहुंचाया तो लोग उनकी जय जयकार करने लगे थे। एक कवि श्री हरध्यान सिंह ने एक सभा में उनकी इस सफलता के लिए गाना गाया था तो चौ. बंसीलाल बड़े खुश हुए और उनके बारे में जानना चाहा। उसने बताया कि वह भिवानी में जिला स्तर पर पब्लिक रिलेशन में तृतीय श्रेणी का कर्मचारी है। चौ. बंसीलाल ने उसकी तनख्या पूछी तो उसने बताया पांच सौ रुपये महीना। चौ. बंसीलाल ने कहा कि आपको तो एक हजार रुपये तनख्याह मिलनी चाहिए और चौ. बंसीलाल ने चण्डीगढ़ में मंत्री मंडल की विशेष बैठक बुलाकर उसे विशेष तौर से द्वितीय श्रेणी में पदोन्नत करके एक हजार रुपये तनख्याह दिलाई।

उनके बारे में ये भी कहा जाता है कि एक औरत उनसे मिलने आई जिस के पति को किसी केस में फांसी की सजा सुनाई गई थी और राष्ट्रपति के पास माफी की अपील की हुई थी। चौ. बंसीलाल ने उससे हमदर्दी दिखाई और केस के कागज दिखाने को कहा क्योंकि चौ. साहब खुद एक वकील भी थे, उन्होंने केस को गौर से पढ़ा और उस महिला को मदद का आश्वासन दिया। फिर दिल्ली जाकर राष्ट्रपति जी से भेंट कर केस की अपील के बारे दलील दी। राष्ट्रपति जी उनसे सहमत हो गए और माफी की अपील स्वीकार कर ली। इस तरह चौ. साहिब ने एक महिला से वायदा करके उसके पति की जान बचाई।

यहां मैं अपने भी कुछ संस्मरण बता रहा हूँ। मेरी शादी 25 जून 1975 को डीघल गांव के सरपंच चौ. मनफूल सिंह अहलावत के घर हुई थी, जो कि चौ. बंसीलाल से अच्छे सम्बन्ध रखते थे और उन्होंने शादी में आने का निमंत्रण दिया था जिसे चौ. बंसी लाल ने स्वीकार कर लिया था। मेरी बारात में मेरे गांव पाकसमां (रोहतक) के कुछ बुजुर्ग इसलिए बारात में आए थे कि वे चौ. बंसीलाल को देखना चाहते थे क्योंकि इस दिन देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने राजनीतिक हलचल के नाते अपने मंत्री मण्डल की आपात मीटिंग बुलवाई थी व कुछ सहयोगी मुख्यमंत्रियों को बुलाया था ताकि भावी राजनीतिक फैसला लिया जा सके। चौ. बंसीलाल भी उस महत्वपूर्ण मीटिंग में शामिल हुए थे। मीटिंग दोपहर तक चली। उसके बाद चौ. बंसीलाल चण्डीगढ़ जाने की बजाए दिल्ली से रोहतक होते हुए डीघल शादी में पहुंचे। सब ने बड़े हर्ष से उनका स्वागत किया, बुजुर्ग लोग बड़े खुश हुए, उनकी इच्छा पूरी हुई। चौ. बंसीलाल हमारे साथ कुछ देर बैठे, बातें की और आर्शीवाद देकर चण्डीगढ़ के लिए चल पड़े। उसी रात को देश में आपातकालीन स्थिति घोषित हो गई थी।

दूसरी घटना 20 मार्च 1999 की है जब चौ. बंसीलाल चौथी बार हरियाणा के मुख्यमंत्री के पद पर थे। हमने अपने गांव पाकसमां में कार्यक्रम में उनको व केन्द्र में श्री अटल बिहारी बाजपेई की सरकार में राज्य कृषि मंत्री श्री सोमपाल शास्त्री को बुलाया था। ये दोनों दिल्ली से ही साथ हमारे गांव आए थे, जहां पूरे गांव ने उनका हर्ष से स्वागत किया था। मैं हिसार से अपने कुलपति डा. जे. बी. चौधरी के साथ गांव पहुंचा था। मेरे भाई व गांव के सरपंच यादराम राणा ने सब का स्वागत किया व गांव में हुए कार्यों की जानकारी दी तथा जब नई मांगों के बारे पढ़ने लगे तो श्री सोमपाल शास्त्री ने कहा कि ये मेरे पूर्वजों का गांव है, मांगे मैं पढूगा। इस पर चौ बंसीलाल ने कहा कि फिर तो आप मांग पढ़ते जाओं और मैं हां भरता जाऊंगा और कल से ही ये कार्य शुरू हो जाएंगे। मेरा हुक्म तो गोली की तरह चलता है। वाकई वे अपने काम व इरादे के इतने पक्के थे और काम शुरू भी हो गए। परन्तु कुछ समय तक कांग्रेस के समर्थन से सरकार चली परन्तु फिर उसने भी साथ छोड़ दिया और 21 जुलाई 1999 को चौ. बंसीलाल ने त्याग पत्र दे दिया।

काश उनकी सरकार न गिरती तो न केवल हमारे गांव के विकास कार्य होते बल्कि और ऐसे हजारों गांव के विकास कार्य इस हरियाणा निर्माता और विकास पुरूष के कर कमलों द्वारा होते व भविष्य में भी उनसे ऐसी ही आशाएं थी। परन्तु शायद नीयति को ऐसा मंजूर न था। आगे वह सन् 2000 के चुनाव में जीते परन्तु कम सीटें आई और लोकदल की सरकार बन गई। फिर उन्होंने सन्

हम हमेशा कठिनाई के स्थान पर आसानी की ओर आकृष्ट होते हैं। जबकि कठिनाई से वही निपट लेना श्रेष्ठ होता है। –अज्ञात

2005 में चुनाव नहीं लड़ा। परन्तु अपने बेटों श्री सुरेन्द्र सिंह व श्री रणबीर सिंह को कांग्रेस पार्टी से एम.एल.ए. बनवाया।

स्वर्गवास

चौ. बंसीलाल ने जीवन भर जनता के लिए अथक प्रयास किए, दिन रात राज सेवा में लगे रहे। जनता की वाही–वाही भी मिली कुछ हठी स्वभाव व नसबंदी तथा नशाबंदी की ज्यादतियों के कारण बुराई भी मिली, पारिवारिक परेशानियां भी झेली। सबसे बड़ा सदमा तब लगा जब इनके पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह जो हरियाणा के कृषि मंत्री थे 31 मार्च 2005 को हेलिकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई। श्री ओ.पी. जिन्दल ऊर्जा मंत्री भी इस दुर्घटना में मारे गए थे। इस बड़ी उम्र में वह कुछ समय से अस्वस्थ रहने लगे थे और 28 मार्च 2006 को इस भारत के लाल ने अपने निवास दिल्ली में शरीर त्याग दिया।

उनके पार्थिव शरीर को इनके पैतृक गांव गोलागढ़ में पूरे राजकीय सम्मान के साथ हजारों लोगों की उपस्थिति में अंतिम विदाई दी गई। हरियाणा के गवर्नर माननीय ए.आर. किदवई, मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, केन्द्रीय रक्षामंत्री, प्रणवमुखर्जी (पूर्व राष्ट्रपति) व अन्य केन्द्र तथा राज्य के मंत्री, सचिव, अधिकारी व अन्य जाने माने नेतागण उनको श्रद्धाजंलि देने पहुंचे। उनको 10 मई 2006 को संसद में श्रद्धांजलि दी गई। लोकसभा में स्पीकर श्री सोमनाथ चटर्जी ने उनको एक बेहतर सांसद व केन्द्र में मंत्री के रूप में उनकी सेवाओं की सराहना की। राज्य सभा में सभापति श्री भैरो सिंह शेखावत ने कहा कि राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं को याद रखा जाएगा। दोनों सदनों में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत नेता को श्रद्धाजलि दी।

यादगार संस्थाएं

चौ. बंसीलाल की याद में कई संस्थाएं खोली गई हैं। उनके बारे में पुस्तके भी लिखी गई हैं व उनकी प्रशंसा में गाने भी गाए जाते हैं।

- उनकी याद में चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने जुई नहर का नाम सन् 2008 में चौ. बंसीलाल नहर रखा।
- उनकी याद में भिवानी में राजकीय पॉलिटैक्निक संस्था बनाई।
- भिवानी में उनकी आदमकद मूर्ति नवम्बर 2012 में स्थापित करवाई।
- लोहारू में राजकीय कॉलेज का नाम उनके नाम पर रखा गया।
- तोशाम में उनके नाम पर कन्या महाविद्यालय का नाम रखा गया।
- सन् 2014 में उनके नाम से भिवानी में चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय स्थापित किया गया।
- लाहली (रोहतक) में क्रिकेट स्टेडियम का नाम उनके नाम पर रखा गया।

इनके जीवन पर लिखी पुस्तक का विमोचन करते हुए राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़ियां ने कहा कि चौ. बंसीलाल एक सच्चे इंसान व लग्नशील और मेहनती मुख्यमंत्री थे। जिन्होंने हरियाणा राज्य को एक उन्नतशील दिशा दी। मुख्यमंत्री चौ. भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने कहा कि चौ. बंसीलाल ने हरियाणा में विकास की नींव डाली व राज्य को अग्रणी श्रेणी में ला खड़ा किया। वह मेरे लिए सदा रोल मॉडल रहे और मैं भी उसी रास्ते पर चलकर हरियाणा के निर्माण कार्य में लगा हुआ हूं।

चौ. बंसीलाल (हरियाणा के लाल), पुरानी रियासत लोहारू के जनता सेवक होने के कारण व स्वभाव से हठी तथा दृढ़ इरादे वाले होने के कारण हरियाणा के लौह पुरूष कहलाए।

"परमात्मा उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें"

जय किसान, जय कृषि विज्ञान।

आर्यवीर साहरण गौत्री हरफूल जाट जुलाणी का

इनका जन्म सन् 1892–93 ई. के लगभग गांव जुलाणी, जिला जींद (उस समय जीन्द एक रियासत थी) में चौधरी रतना साहरण के घर हुआ था। यह तीन बहन–भाई थे। इसकी दो बहनें थी। इनके बचपन में ही इनके पिता जी की मृत्यु हो गई। इसलिये उनकी माता जी को इनके चाचा जगराम का लता उड़ा दिया गया था। इनकी एक बहन की शादी नरवाना तथा दूसरी की शादी दाबी टेक सिंह से की गई थी। उस जमाने में वर्षा कम होती थी कई बार अकाल पड़ते थे। गांव में उस समय स्कूल भी नहीं था। इसलिए यह अनपढ़ ही रहे। इस समय तक भी जुलाणी में दो नम्बरदारियां थी। गांव में दो ठोले थे। एक का नाम था साबू तथा दूसरे का नाम था गंगा राम ठोला। गंगाराम ठोले का नम्बरदार था। गंगाराम तथा साबु ठोले का नंबरदार था मुगला। जब यह तीनों बहन–भाई छोटे थे तो इनकी माता जी इनको लेकर कई वर्षों तक गांव संडोवा, जिला भिवानी में अपने रिश्तेदारों के यहां रहती थी। इस बीच में साबु ठोले के नंबरदार मुगले ने इसके पैतृक मकान पर कब्जा कर लिया। जब इसने वापिस आकर अपना मकान मांगा तो मुगले नंबरदार ने इसका मकान देने से इंकार कर दिया। इसने पूरे गांव की पंचायत बुलाई। इस पंचायत ने कहा कि यह मकान तो रतने का है इसे हरफूल को दे दिया जाये। इस बात का सरेआम समर्थन कुडाराम ने किया था। उस समय मुगला नंबरदार ने इनका मकान देने से इंकार कर दिया तथा मुगले का साथ शोनचन्द पुत्र माडू ने दिया।

इसी बीच कई बार खिंचतान चलती रही और मौका पाकर मुगला नंबरदार व शोनचन्द पुत्र माडू ने इसे एक झूठे केस में जींद थाने में पकड़वा दिया। थाना जींद में शोनचन्द का एक रिश्तेदार थानेदार दयाकिशन लगा हुआ था। उससे कह कर इसे अत्यधिक यातनाएं दिलवाई गई। हरफूल को इसी झूठे केस में तीन मास की जेल की सजा भी हुई थी। थाने में उस जालिम थानेदार

कलियुग में रहना है या सतयुग में यह तुम स्वयं चुनो। तुम्हारा युग तुम्हारे पास है। –विनोबा भावे

ने उसे अमानवीय ऐसी यातनाएं दी कि जब वह दिन में ताश खेलता था तो उसके हाथ के तलवों पर पलंग के पावे रखे जाते थे। उसके पैरों में बेडिया डाल दी जाती थी तथा जब पैरो से ऊपर पंलग के पवे रखे जाते थे तो इसके हाथों में हथकड़ियां डाल दी जाती थी।

जेल से वापिस आने के पश्चात कहते हैं कि यह सेना में भर्ती हो गया। वहां पर इसने लगभग 10 वर्षों तक अंग्रेजों की सेवा की। वह इतना निशानची बन गया कि या तो आवाज में रामायणकाल से राजा दशरथ ने आवाज पर तीर मारा था या महाभारतकाल में हस्तीनापुर नरेश पाण्डु ने या फिर इस कलयुग में हरफूल जाट साहरण इतना निशानची था। 10 वर्ष की सेवा के पश्चात जब वह वापिस आया तो उस समय जब अंग्रेज अधिकारी ने इसकी सेवा से खुश होकर कहा था कि अपने पैसों के इलावा आप जो ईनाम मांगेगे मिलेगा। उस समय इन्होंने जब फोल्डीग गन मांगी थी जो उस अधिकारी ने इसे दे दी थी। इतने वर्षों के बाद जब वह गांव में आया था तो इसे कोई पहचान नहीं सका था कि वह कौन है। उसके सहयोगी हम ऊमर केवल चंद्र सुपुत्र रामनाथ ने इसके एक काले दांत को देखकर कहा था कि तुम रतना के बेटे हरफूल हो।

इसी दौर में इसका एक सहयोगी भरथा जाट गांव गगाना (सोनीपत) का निवासी था। इसके साथ इस अंतिम दिनों तक प्यार रहा था। इसकी मां ने इसकी मांग (सगाई) की बात ढोबी से हुई। वहीं पर इसकी बहन ब्याही हुई थी। इसके मौसा ने इनकी मांग को यह कहकर इंकार कर दिया कि तू तो बिगडेल है मैं अपनी बेटी तेरे नहीं ब्याहूगा। उल्टा मौसा इसकी रिपोर्ट पुलिस में मुखमरी करने लगा। इसने अपने मौसा को भी मार दिया था। इसकी मंगेतर का नाम भूरो था। उसे यह वहां से आया था। वह भी प्यार करती थी। उसने अपनी मंगेतर को गांव गंगाना में अपने मित्र के पास छोड़ रखा था। अपने दुःखों तथा अपने घर को छुड़ाने के लिए इसने पुनः गांव में पंचायत की तब भी मुगला ने इंकार कर दिया। एक दिन शानचन्द पुत्र माडू का उसने गोली से उड़ा दिया। इसने आगे जो–जो कार्रवाई की उनका वर्णन आगे दिया जा रहा है।

वापिस आते ही सबसे पहले तो उसने जीन्द थाने के दरोगा को सदा की नींद सुलाया जिसने उसे झूठे षड्यंत्र में फंसाकर असहनीय सजायें दी थी। इसके बाद वह फिर अपने गांव जुलाणी में गया तथा पंचायत की उस समय भी पंचायत का वही जवाब था कि तू तो गेलडिया है तेरे को हक कैसा। फिर इसके बाद एक दिन मौका लगाकर साय के समय गांव में उन परिवारों पर धावा बोल दिया जो इसका हक नहीं दे रहे थे। इस गांव के पंचायती मुगले के भी पाट बन्द हो गये। उस दिन सारे गांव के दरवाजे बन्द थे। यदि खुला था तो केवल चौधरी कूड़ाराम सत्यवादी का ही दरवाजा खुला था। उसने विरोधियों की सफाई करने के बाद वह वहां से निकल पड़ा तथा दायें–बायें दूर–दराज के गांव में छुपकर अपना जीवन बीताने लगा। जब वह फौज में था तो सामाजिक लिहाज से इसके परिवार वालों ने इसकी बहिन की शादी डोभी (नरवाना) में कर दी। जब वह वहीं रहने लगा। वहां पर भी इसके मौसा ने इसको पकड़वाने की साजिश रची। इनको पता लग गया अपने मौसा को भी सदा की नींद सुलाकर वहां से भी चलता बना। इस बीच वह जींद तथा लोहारू रियासतों के गांवों में घूमता–फिरता तथा अपना जीवन गुजार रहा था।

अब वह दिशाहीन युवक था। समाज ने उसे अपनाया नहीं। ठोढ़–ठिकाना कोई था नहीं। उस समय देश गुलाम था। हिन्दु व मुस्लिम दंगों की भी शुरूआत हो चुकी थी। वह गायों से बेहद प्रेम करता था। टोहाना में मुसलमान रांघड़ों का एक गौवध करने का हत्था था। उस नगर के हिन्दु लोग इससे बड़े दुःखी व पीड़ित थे। उसी गांव का एक बनिया था। जिसने किसी की मदद से हरफूल जाट को बुलाया तथा कहा हम इन रांघड़ों का मुकाबला तो नहीं कर सकते, लेकिन यह गौ हत्या हमें खटक रहा है। इसमें प्रतिदिन 12 बजे गऊओं को काटा जाता है। आप हमारी मदद कीजिए। तब हरफूल ने बनिया से कहा था कि लाला देख यदि तेरे अंदर दम हो तो, मैं तो तैयार हूँ। सबसे पहले आपने मेरे को वह जगह दिखानी होगी तथा उन कसाईयों को कहना होगा कि यह गौ हत्या बंद करो। यदि वे नहीं मानते तो आपको मुझे अपनी स्त्री के वस्त्र व पूरे गहने देने होंगे। बनिया इसके लिए तैयार हो गया। जब वह हत्थे में जाकर उन रांघड़ों को कहने लगा कि हम हिन्दु हैं आप कृपा करके यह गौ हत्या बन्द कर दीजिये तो इसके बदले में रांघड़ों ने कहा कि बाकी दिनों में तो 10 गऊऐ दी कटती थी आज 12 गऊयें काटी जायेंगी। यदि तुझे कुछ गऊओं की मिट्टी चाहिये तो तेरे घर भेज दी जायेगी। बनिये ने यह सारी बातें हरफूल जाट को बताई वह जनाने वस्त्र पहन पूरे गहनों से सिंगार करके उस हत्थे में पहुंच गया तथा कहने लगा कि मुझे मेरा पति छोड़कर चला गया है मुझे आसरा चाहिये तो रांघड़ों के दिल में उलजलूल विचार आये कहने लगे हम तुझे रख लेंगे। तब उसने उन रांघड़ों को कहा यह गऊयें आपने यहां पर क्यों बांधी हुई है तो उत्तर मिला कि ठीक 12 बजे इनका वध किया जाएगा। तब उस जनाने भेष में हरफूल ने कहा मैं तो हिन्दु नारी हूँ। निकाह के बाद ही मुसलमान बनूंगी कृपा करके मेरे आगे पर्दा लगा दें। रांघड़ों के दिल में खोट तो था ही उन्होंन वैसा ही किया। उस पर्दे की आड़ में हरफूल जाट ने वे जनानी के सारे वस्त्र व गहने उतारे थैले में डाले तथा थैले से मरदाने कपड़े पहने और फौल्डिंग गन तैयार की। ठीक 12 बजे से एक मिनट पहले 23 जुलाई सन् 1930 ई. को उन सभी मुसलमान रांघड़ों को भून डाला तथा उसने गायों को मुक्त करा दिया। सारे नगर में रूक्का पड़ या कि गौ वध करने का हत्था समाप्त कर दिया गया। हरफूल जाट सारे जनाने वस्त्र व गहने लेकर बनिये के घर गया तो उनको सौंपा तथा अपनी राह ली। बनिये के लाख कहने पर उसने उन गहनों में से एक छला तक भी नहीं लिया बल्कि उल्टा यह कहा कि ये गहने मेरी बहिन के हैं। मैं अपनी तरफ से एक रुपया अपनी बहिन को देता हूँ। यह कार्य करके हरफूल ने अपना रास्ता नापा तथा जंगलों में जा छूपा। जिला जींद का ही एक अंतिम गांव जो गोहाना के पास था। मालसवाना वहां का मुसलमान रांघड़ उसका पक्का यार था। एक बार ऐसी घटना घटी की उस कासू के हाथ से एक खागड़ मारा गया। वह क्षेत्र जाट बाहुल्य था। 20–30

प्रलय होने पर समुद्र भी अपनी मर्यादा को छोड़ देते हैं लेकिन सज्जन लोग महाविपत्ति में भी मर्यादा को नहीं छोड़ते। –चाणक्य

गांवों की पंचायत हुई। कासू को मारने की सलाह बनाई गई। इनमें से कुछ लोगों ने कहा कि हरफूल जाट जुलानी वाला इस कार्य को आसानी से कर सकता है। हरफूल जाट जुलानी वाला कट्टर हिन्दु था। अपनी दोस्ती की भी परवाह किये बिना उसने खागड़ को मारने वाले कासू रांघड़ को सदा की नींद सुला दिया। जब कभी कोई ठग चोर धोखे से राहगीरों की हरफूल का नाम लेकर लूटता था तो वह उस व्यक्ति का पता लगाकर या तो उससे माफी मंगवाता यदि वह आना–कानी करता तो उसको सदा की नींद सुला देता। एक दो घटनायें इस प्रकार की हुई इस प्रकार किसी भी द्वारा हिम्मत नहीं हुई कि वह किसी कमजोर राहगीर व औरत को लूट ले। इन सभी बातों ने हरफूल को जमीन से उठाकर उत्तर भारत के लोगों की आंखों में आकाश पर बैठा दिया। इस प्रकार वह फरारी की हालत में इधर–उधर घुमता–फिरता था। उसको हमेशा गिरतारी का भय रहता था। वह छुपने के लिए इसी दौर में राजस्थान के गांव पचेरी में एक ठाकुर के घर पर जाकर रहने लगा। उस ठाकुर के दिल में बेईमाना आ गया क्योंकि अंग्रेज सरकार ने हरफूल को जिन्दा या मुर्दा गिरतार करने या करवाने पर काफी बड़ा ईनाम रखा हुआ था। वह ठाकुर जैसा ये लोग गदारी करते हैं लालच में आ गया। उसने मुखबरी करके हरफूल जाट को एक दिन सोते हुए गिरतार करवा दिया। इसके बाद में एक कहावत यह भी है कि वह अपनी धर्म बहिन एक ब्राह्मण की लड़की के घर ठहरा हुआ था। यह धोखा उसकी धर्म बहिन ने किया था। कारण चाहे कोई भी रहा हो उस शेर को पिंजरे में बंद कर लिया गया उस समय उसे हिसार की सोंट्रल जेल में बंद कर दिया गया। वहां पर भी उसने अपने एक निजी मित्र की सहायता से जेल में सुरंग को देख लिया तथा हरफूल जाट वहां से स्थानांतरित करके फिरोजपुर की सेंट्रल जेल में भेज दिया गया। क्योंकि अंगेज अधिकारियों को भय था कि यह क्षेत्र जाट बाहुल्य है की जाट जेल पर हमला बोलकर उसे मुक्त न करवा लें। वहीं पर ही उन पर मुकदमा चलाया गया तथा हरफूल जाट को फांसी दी गई तथा उनकी लाश को नदी में बहा दिया गया। इस प्रकार इस सवाशेर वाले जाट का अंत हुआ। उसने अपने जीवन में कभी भी किसी गरीब को नहीं सताया। उल्टा गरीबों की ही मदद की, कई गरीब कन्याओं की शादियां करवाई। वह पक्का आर्य गौ पुजारी, सच्चा देशभक्त एक समाजसेवी भारत मां का सच्चा सपूत था। ऐसे व्यक्ति इतने दिल वाले इस जग में कभी–कभी ही पैदा होंते हैं। खुद तो इस जमाने की ठोकरे व अपमान खाने के लिए ही पैदा होंते हैं। ऐसी परिस्थितियां उसके जीवन में गुजरी उसने कभी किसी गरीब का दिल नहीं दुखाया। उसने धर्म की खातिर दोस्तों को भी दाव पे लगा दिया। अन्यायियों को मजा चखाया। अपने उन दुश्मनों को मौत के घाट उतारा जिन्होंने उस पर असहाय अत्याचार किये थे। उस जमाने में टोहाने का हत्था तोड़ कर वह महान कार्य किया जिसे हम आज स्वतंत्र भारत में भी नहीं कर सकते। वह महान व यौद्धा था दलेर था। हम उनको कोटि–कोटि नमनः करते हैं। उसनें जाटों का ही नहीं बल्कि न्यायवादियों का सिर ऊंचा किया है। जाट कौम को उन पर गर्व है। धन्य है वह माँ जिसने ऐसे लाल को जन्म दिया।

वीर हरि सिंह नलवा

– भले राम बैनीवाल
गांव डुपेडी, जिला करनाल

उसका जन्म सन् 1791 ई. में जिला गुजरावाला (पाकिस्तान) में उत्पल गौत्री जाट/जट्ट गुरदयाल सिंह के घर हुआ था। इनकी माता का नाम धर्म कौर था। इनके पिता सुक्रचक्रिया मिसल के संस्थापक थे। इनकी पढ़ाई के लिए एक सिख विद्वान जो पंजाबी तथा एक मौलवी जो फारसी पढ़ाता था लेकिन इनका दुर्भाग्य ही कहिये की 7 साल की आयु में इनके पिता का देहान्त हो गया। इसके बाद इनकी माता इनको लेकर अपने मायके चली गई जहां पर बालक जवान हुआ। यह बड़े डीलडौल वाले तथा गठीले शरीर का युवक था। इनके शरीर में बिजली जैसी तेजी तथा आंखों में सम्मोहन की शक्ति थी। यह केशधारी नहीं थे। परन्तु दाढ़ी रखी हुई थी तथा उस समय के प्रचलन के अनुसार पगड़ी बांधते थे। यह कहावत इस पर सही फिट बैठती है कि

जाकौ राखे साईयां, मार सके नहि कोय।
बाल न बाका कर सके, जो जग वैरी होय।।

आदिकाल से आरंभ कर अंग्रेजों को भारत छोड़ने तक अटक से कटक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक इस देश का विस्तार था। आदिकाल में तो अटक से परे भी भारत ही था। क्योंकि हमारा शान्तिमय विस्तार वाद असीम था और सारा संसार उसका क्षेत्र रहा है। हमारी नीति का आधार सत्य, न्याय और संस्कृति रहा है। ये ही तीन गुण जाट/जट्ट के अक्षरों में भी आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई घटना घटित होती है। वे सच्ची भी हो सकती है तथा झूठी भी। इसी प्रकार की घटना नलवे के जीवन में भी घटित हुई थी। हुआ यूं कि एक बार युद्ध क्षेत्र में हरिसिंह के समीप ही एक गोली आकर गिरी। गोली एक पत्थर को लगी और पत्थर चकनाचूर हो गया। किन्तु आश्चर्य की बात की उसके नीचे एक चुहिया थी। जो पत्थर के टुकड़े बिखरने पर भी न केवल जीवित रही अपितु किसी प्रकार भी आहुत हुए बिना वहां से उछलती और भागकर किसी अन्य स्थान पर जाकर छिपने का यत्न करने लगी। यह घटना देखकर हरिसिह का दिल बेधड़क हो गया तो डर नाम की चीज उसके दिल से कोसों दूर चली गई।

उस समय पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह का राज्य था। उनकी राजधानी लाहोर थी। वह प्रत्येक बसंत पंचमी के दिन दस दिनों तक युवा एवं सैनिकों का आयोजन किया करता था। जिसमें वह अपनी सेना के लिए भी युवकों की छंटनी किया करता था। सन् 1804 ई. का बसन्त हरिसिंह के लिए एक पर्व व बखशीश बनकर आया। उस समय उसकी आयु केवल 14 वर्ष की थी लेकिन शरीर पूरे युवा

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। – मनु

का था। उसने भी अपने अद्भुत कर्तव्य दिखाये जो महाराजा को बहुत पसंद आये। उन्होंने उसे अपने अंगरक्षक के रूप में रख लिया। लेकिन जल्दी ही भाग्य ने फिर पलटा खाया कि जब एक बार महाराजा शिकार को गये तो एक विचित्र घटना वहां पर घटित हुई कि उनके वन में प्रविष्ठ होते ही सामने से एक बाघ आ गया और वह इस तीव्र गति से हरिसिंह की ओर झपटा कि किसी को कुछ सोचने समझने अथवा करने का अवसर ही नहीं रहा। बाघ सहसा आक्रमण कर बैठा और पूरे यत्न से उसने हरि सिंह को दबोचने का यत्न भी किया। हरिसिंह को म्यान से अपनी तलवार निकालने का अवसर नहीं मिल पाया।

हरिसिंह इस आक्रमण से तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उसने शेर को अपने हाथों में इस प्रकार दबोचा तथा घूमाया और वहीं पर ढ़ेर करके फेंक दिया। यह देख सभी चकित रह गये। जब बाकी लोग उसके समीप पहुंचे तो सब कुछ हो चुका था। उन्होंने कहा घबराओं नहीं, हम पहुंच गये हैं। तब हरि सिंह ने शान्त भाव से उत्तर दिया महाराज। आप कष्ट न कीजिए आपकी कृपा से बाघ परलोक पहुंच गया है। यह घटना देखकर महाराज को महाभारतकालीन राजा नल की याद आई तथा कहा तूं तां नाल वांग बहादूर है। इसी से इनका नाम नलवा हो गया। नलवे ने कई युद्धों में भाग लिया। इनकी युद्ध कला इतनी निपुण थी कि दुश्मन मैदान छोड़कर भाग जाया करते थे। वे इसके सामने देखने का भी साहस नहीं जुटा पाते थे। इनकी धाक अफगानिस्तान, सिन्ध व मुलतान बिलोचिस्तान में इतनी फैल चुकी थी। अफगानी औरतें अपने बच्चों को यह कहकर डराया करती थी कि चुप वह आ गया नलवा इसकी युद्ध कला कौशल को देखकर नौशहरा के भीषण युद्ध का वर्णन करते हुए लिखा है 'युद्ध करने में तो पठान व हिन्दु जाट एक समान है। किन्तु दोनों में अंतर यह है कि हिन्दु हारते हुए भी मैदान को नहीं छोड़ते जबकि पठान हार होती देख मैदान छोड़कर भाग जाया करते हैं।'

कहते हैं कि जब डेराइस्माइल खां व गाजिखां के पठान सरदारों ने हिन्दु जाटों के आक्रमणों को रोकने के लिए एक बूढ़े नवाब को पत्र लिखा कि हमने मुकाबले का इरादा किया है, तुम हमारे साथ मिल जाओं, खुदा पर भरोसा है, वह भी हमारी मदद करेगा। इसके उत्तर में बूढ़े नवाब को पत्र लिखा मुकाबले की तैयारी जरूर करो खुदा का भरोसा छोड़ दो। क्योंकि खुदा अब हिन्दु हो चुका है। नलवे के नेतृत्व में मुलतान गाजिखां, डेरा इसमाइल खां, बिलोचिस्तान, सिन्ध नेक भागों पर विजय पाई। इसके बाद वह देवभूमि कश्मीर की ओर चला।

कश्मीर में उस समय मुसलमानों का इतना बोलबाला था कि वह किसी हिन्दु को सांस तक नहीं लेने देते थे। इस सारे हालात के लिये पौराणि, वामर्धी तथा धर्मी के ठेकेदार ही दोषी थें। उस समय कश्मीर में ब्राह्मणों की इतनी बुरी स्थिति थी कि एक अंग्रेज लेखक सरवाल्टर लारेंस ने अपनी पुस्तक वैली ऑफ कश्मीर में तो यहां तक लिखा है कि सड़क पर यदि किसी मुसलमान को कोई कश्मीरी पंडित चलता दिखाई देता तो वह उछलकर मुसलमान उस की पीठ पर जा चढ़ता और अपने गन्तव्य तक उस को उसी प्रकार ले जाता। कश्मीर में नलवे ने ये भी अपनी धाक जमाई वहां के शासकों को बुरी तरह पछाड़ा तथा उसको अपने अधिकर में किया। बाद में महाराजा रणजीत सिंह ने नलवा को वहां का गर्वनर नियुक्त किया। वे वहां पर सफल गर्वनर के रूप में कार्य करते रहे। वहां पर उसने अपनी मुद्रा भी चलाई। इसके बाद जब महाराजा ने देखा कि अब कश्मीर में सुख शान्ति है उनको वहां से वापिस बुला लिया।

इसके बाद नलवे ने मुंधेर तथा हजारो को विजय किया तथा वहां पर सिक्खों का राज्य स्थापित किया। वहीं पर उसने हजारा में ही हरिपुर दुर्ग का भी निर्माण करवाया। उसने अपने जीवन काल में अनेक अबलाओं को दुष्टों के चुगंल से छुड़ाया। इसके बाद उसको अटक की विजय के लिए भेजा गया। सन् 1822 ई. को उसने पठानों को बुरी तरह पराजित किया। पठानों को पाठ पढ़ाने के लिए महाराजा रणजीत सिंह ने अंग्रेजों से भी सन्धि कर ली क्योंकि वह अफगानिस्तान को भी पुनः भारत का अभिन्न अंग मानते थे तथा बनाना चाहते थे। इसके बाद महाराज ने हरिसिंह को सेनापति बना दिया। इसके बाद नलवे ने जम रोध का युद्ध जीता।

नलवे का महाप्रायणः इनको युद्ध में दो गोलियां लगी थी। जिसके कारण इनकी हालत बिगड़ गई। अत्यधिक रक्तस्त्राव होने से दुर्बलता बहुत बढ़ गई थी। घावों में असहाय पीड़ा हो रही थी। यद्यपि हरिसिंह नलवा में बोलने की किचित भी सामर्थ्य नहीं थी फिर भी उन्होंने सबको एकत्रित कर उन्हें संबोधित करते हुए कहा, मेरे प्रियजनों, मुझ लग रहा है कि यह शरीर अब अधिक टिकने वाला नहीं हैं। आप लोगों ने जिस वीरता का परिचय इस युद्ध में दिया है। उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। हम लोगों ने बड़े प्रयत्न से आठ सौ वर्ष बाद फिर इस भूमि को पठानों से छीनकर इस पर हिन्दु राज्य स्थापित किया है। जो जयपाल के समय में भारत से छिन गया था। इस क्षेत्र की प्राण–पण से रक्षा करना आप लोगों का परम कर्तव्य है।

इससे अधिक बोलना उनके लिए सम्भव नहीं हो पा रहा था। उन्हें असहाय वेदना हो रही थी। धीरे–धीरे वे अचेत हो गये। फिर कुछ काल के उपरान्त उनकी आत्मा उस नश्वर देह का परित्याग कर अपने धाम को चल दी।

यह दुःखद समाचार एक तेज सांडनी सवार द्वारा लाहौर दरबार भेज दिया गया। तीसरे दिन वह सवार लाहौर जा पहुंचा। महाराजा रणजीत सिंह को जब यह समाचार मिला तो इससे उनको हृदय विदारक आघात लगा। कुछ क्षण तक तो उनके मुख से एक शब्द भी नहीं निकल सका। फिर अंत में बोले, हिन्दु राज्य का आज एक बहुत बड़ा स्तंभ गिर गया है।

इस प्रकार सन् 1837 ई. में केवल 47 वर्ष की ही अल्प आयु में शौर्य का यह सूर्य, जाति प्रेम का प्रतीक, विनम्रता की मूर्ति, अबलाओं का रक्षक तथा दीनों का दाता इस धरती पर से सहसा विलुप्त हो गया। यह महाराजा रणजीत सिंह की ही क्षति नहीं हुई अपितु भारत देश की क्षति थी। भारत की भावी पीढ़ी ने इस क्षति को अनुभव किया और आज भी वह इस क्षति को भूल नहीं पा रही है।

घपले-घोटाले क्यों होते हैं ?

– डॉ. भूप सिंह, भिवानी

प्रतिदिन समाचार पत्रों में किसी न किसी घपले–घोटाले, हेरा–फेरी, भ्रष्टाचार की खबर पढ़ने को मिलती है। हमें अच्छा लगे या बुरा लगे इस बात से कुछ अन्तर नहीं पड़ता। सिद्धान्त कार्य–कारण का है। कारण होगा तो कार्य होगा ही, कोई रोक नहीं सकता। परिणाम से बचना चाहते हैं तो कारण हटाना होगा। निश्चित रूप से हम अपने समाज व राष्ट्र को भ्रष्टाचार, घोटाले, बेईमानी से बचाना चाहते हैं। इसके लिये हमें इन बिमारियों के कारण और कारण के निवारण पर विचार करना होगा।

घपले–घोटाले, भ्रष्टाचार के कारणों पर विचार करते हैं तो मूल रूप से दो बातें सामने आती हैं – पहली बात राष्ट्रीय भावना का ना होना और दूसरी बात सात पीढ़ी का इन्तजार। दोनों कारणों पर चर्चा करते है। राष्ट्रीय भावना से अभिप्राय है किसी भी बड़े–छोटे कार्य को करते समय यह विचार करना कि मेरे ऐसे करने से समाज पर, देश वासियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? मेरे किसी कार्य से समाज–राष्ट्र का हित होगा या अहित होगा। जब घपले–घोटाले–भ्रष्टाचार से राष्ट्रीय भावना के सम्बन्ध का विचार करते हैं तो हम आगे राष्ट्रीय भावना को विभिन्न स्तरों में बांटते हैं। कोई व्यक्ति अपना नुकसान सहन करके, कष्ट उठाकर और यहाँ तक कि अपने जीवन को दाव पर लगाकर देश–समाज का हित साधता है तो यह उच्च कोटी की राष्ट्रीय भावना है। एक व्यक्ति अपना नुकसान तो सहन नहीं करता, कष्ट भी नहीं उठाना चाहता पर ऐसे कार्य से बचता है जिससे समाज या देश का अहित हो। यह सामान्य स्तर की राष्ट्र भावना है। एक व्यक्ति केवल अपना हित सोचता है, देश का हित हो या न हो इस बारे में चिन्तन नहीं हैं। यह निम्न कोटी की राष्ट्रीयता है। एक व्यक्ति जानते हुये भी अपने 10 रुपये के लाभ के लिये समाज या राष्ट्र के हजार–लाख का नुकसान करने में कोई परेशानी अनुभव नहीं करता, यह स्थिति राष्ट्रीय भावना की शुन्यता की स्थिति है और इस स्थिति का व्यक्ति किसी भी घपले–घोटाले–भ्रष्टाचार को बड़े आसानी से कर लेगा। इसका अभिप्राय यह हुआ कि यदि व्यक्ति में थोड़ी सी भी राष्ट्रीय भावना होगी तो वह भ्रष्टाचार नहीं कर पायेगा, उसका हाथ, उसका पैर रूक जायेगा। तो घपले–घोटाले–भ्रष्टाचार का एक मुख्य कारण हुआ राष्ट्रीय भावना का ना होना।

एक व्यक्ति का जीवन बड़े संघर्ष, कठिनाई, अभाव का रहा है। यह व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर परिस्थिति अनुकूल होने के कारण किसी बड़े पद पर या किसी राजनैतिक पद पर पहुंच जाता है और कोई घपला–घोटाला–भ्रष्टाचार करने की स्थिति में आ जाता है। वह व्यक्ति उचित–अनुचित, राष्ट्र हित – अहित के बारे भी जानता है। उसके मन में राष्ट्रहित व मौके का फायदा उठाकर पीढ़ियों तक को सुरक्षित करने के लालच का संघर्ष होता है। पिछले समय का अभाव, कठिनाईयां, कष्ट उसे दबाव में ले जाती हैं और पीढ़ियों की सुरक्षा का लालच उससे भ्रष्टाचार करवा लेता है। यदि भ्रष्टाचार करने के अवसर बार–बार उपलब्ध होते हैं तो उसके दिल–दिमाग में उचित–अनुचित के भाव–विचार आने बन्द हो जाते हैं और वह किसी भी घपले–घोटाले के अवसर को हाथ से नहीं जाने देता अपितु अपने पद व स्थिति की सफलता मानने लग जाता है।

हमारे देश में इन दो कारणों के परिणाम स्वरूप घोटाले–भ्रष्टाचार होते रहते हैं। यदि इन कारणों को नहीं हटाया जाता तो घोटालों और भ्रष्टाचार को रोकने की सामर्थ्य किसी की भी नहीं हो सकती। ये कारण तभी दूर हो सकते है जब हम इन कारणों को पैदा करने वाली सोच का विशलेषण कर लें। मनुष्य मात्र की एक मूल इच्छा है कि वह सुखी रहना चाहता है। सुखी रहने के लिये उसे चाहे कुछ भी करना पड़े, वह करेगा। घपले–घोटालें–भ्रष्टाचार भी वह स्वयं व पीढ़ियों को सुखी रखने के लिये करता है। अब यदि सुख के लिये किसी को भ्रष्टाचार करना पड़ रहा है तो वह तो करेगा ही। यह बन्द कैसे हो सकता है? इस समस्या के समाधान के लिये हमें भ्रष्टाचार के कारणों। राष्ट्रीयता का अभाव और सात पीढ़ी की सुरक्षा और मूल इच्छा सुख का सम्बन्ध के बारे विचार करना पड़ेगा।

राष्ट्रहित व सुख – हम अपने सुख के लिये राष्ट्र हित की अनदेखी करके घपला–घोटाला–भ्रष्टाचार करते हैं तो निश्चित रूप से राष्ट्र–समाज–संस्था कमजोर होगी। बार–बार के भ्रष्टाचार से कमजोरी बढ़ती जायेगी और राष्ट्र–समाज–संस्था पराधिन हो जायेगी क्योंकि यह भी सिद्धान्त है कि दुर्बल राष्ट्र–समाज–संस्था स्वतंत्र नहीं रह सकते, उन्हें गुलाम होना ही होगा। अब हमने भ्रष्टाचार करके साधन तो इक्कट्ठे कर लिये पर भ्रष्टाचार के कारण राष्ट्र–समाज–संस्था कमजोर होकर गुलाम बन गई तो क्या हमारे साधन हमें सुख पहुंचा पायेंगे ? कदाचित नहीं। क्योंकि गुलाम सुखी नहीं रह सकता। गुलाम के साधनों को भी कभी भी छीना जा सकता है। यदि ऐसी स्थिति भी बनी रहे कि भ्रष्टाचार के बावजूद भी राष्ट्र–समाज–संस्था किसी के पराधीन न भी हों तो भी सुख नहीं मिल सकेगा क्योंकि राष्ट्र–समाज–संस्था के साधन तो सीमित होते हैं। भ्रष्टाचार के कारण साधन कुछ लोगों के पास केन्द्रित हो जाते हैं और गैर–बराबरी की खाई चौड़ी होती चली जाती है। जितनी असमानता बढ़ेगी तो असंतोष व संघर्ष बढत्रेगे। भ्रष्टाचार के कारण यदि हमने दूसरों के साधनों को हथिया लिया तो मौका मिलने पर वंचित लोग हमसे साधन क्यों नहीं छीन लेंगे? तो हम साधनों के होते हुये भी वंचित लोगों के बीच सुखी नहीं रह पायेंगे। भ्रष्ट लोगों के दिमाग में एक बात और रहती है कि साधन होने पर कहीं भी जाकर सुखी रहा जा सकता है। यदि अपने राष्ट्र–समाज में असंतोष है, बगावत या विरोध है तो किसी दूसरे देश में जाकर सुख से रह लेंगे। यहां इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि भ्रष्टाचार के साधनों के बलबूते दूसरे देश में भौतिक सुख (खाना–पीना–पहनना–रहना) तो प्राप्त हो सकता है पर भावनात्मक सुख (मान–सम्मान–अपनापन) प्राप्त नहीं हो सकता

किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है। – स्वामी विवेकानंद

क्योंकि उस देश के लोग जानते है कि यह भ्रष्ट व्यक्ति अपने देश का नहीं हुआ तो हमारे देश का या हमारा हितैषी कैसे हो सकता है और इस स्थिति में मान–सम्मान मिलना सम्भव नहीं है।

निष्कर्ष यह हुआ कि राष्ट्रहित की अनदेशी करके भ्रष्टाचार द्वारा अर्जित साधन सुख नहीं दे सकते। यदि अर्जित साधन सुख का कारण नहीं बन पा रहा है तो उस साधन को हथियाने का क्या फल हुआ ? तो घपले–घोटाले–भ्रष्टाचार करते समय इन मौखिक बातों पर विचार कर लेना चाहिये नही ंतो दोहरा नुकसान होगा – राष्ट्र कमजोर होगा और आपको सुख नहीं मिलेगा।

सात पीढ़ी की सुरक्षा – निश्चित रूप से भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारी या नेता की ऐसी स्थिति तो है ही कि उसको अपने और उसकी संतान के जीवन में किसी कठिनाई की आंशका नहीं है क्योंकि इस स्तर के अधिकारी या नेता के पास इतने साधन तो होते ही हैं कि उनका और उनकी संतान का जीवन सुख पूर्वक चल सके। फिर भ्रष्टाचार करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? निश्चित रूप से सात पीढ़ी के इन्तजाम के लिये भ्रष्टाचार किया जाता है। अब विचार यह करना है कि क्या वास्तव में सात पीढ़ी का इन्तजाम हो जाता है ? भ्रष्टाचार करके सात पीढ़ी का इन्तजाम नहीं हो सकता क्योंकि यह नियम विरूद्ध है। नियम क्या है ? नियम यह है कि हराम का खाने से हरामजादगी पैदा होती है, इन्सानियत पैदा नहीं हो सकती।

जब अगली पीढ़ी को बिना परिश्रम किए अर्थात हराम का खाने को मिलेगा तो उसकी आदतें खराब होंगी। खराब आदतों के कारण उल्टे–सीधे कार्य होंगे। बुरे कार्यों के कारण भ्रष्टाचार द्वारा इक्कट्ठे किये साधन एक ही पीढ़ी में खर्च हो जायेंगे, सात पीढ़ी तो बहुत दूर की बात है। ऐसा होता हुआ हम सभी देखते हैं। हममें से सभी की जानकारी में दो–चार केस ऐसे अवश्य हैं जहां सात पीढ़ी का इन्तजाम एक पीढ़ी को भी पूरा नहीं कर पाता। तो भ्रष्टाचार द्वारा सात पीढ़ी का इन्तजाम नियम विरूद्ध होने के कारण केवल और केवल वहम है वास्तविकता कतई नहीं हैं।

तो हे भ्रष्ट अधिकारियों व नेताओं भ्रष्टाचार–घोटाला करने से पहले इन मौखिक सिद्धान्तों पर विचार कर लें ताकि तुम्हारी भालाई हो सके नही ंतो सिद्धान्त के आगे किसी का वंश नहीं चलता तुम्हारी तो औकात ही क्या है। हाँ एक उपलब्धि अवश्य होगी कि देश को कमजोर करने और देशवासियों को कष्ट देने का पाप तुम्हारे खाते में अवश्य चला जायेगा।

ORIGIN OF JATS

Appleton's Journal

New York, January 1, 1876 (Vol:XV)

Among the branches of the Hidoo races that of the Jats has long been celebrated, for many reason. There is no people wins the admiration of the stranger. The Jats are principally found in the Punjab, and in the valleys south of Delhi; and the noble and picturesque town of Bhurtpore, with its towering ciadel, seen for across the plain, is the capital of the most important, province inhabited by this handsome, manly, and warlike race. It seems probable that at one period the Jats were the rulers of nearly all the Punjab, where for many centrics they formed a majority of the population, and occupied the position of chief importance. They probably carne from Central Asis: and it is surmised that they were the parent-sock from which carne the Juites, who migrated to Europe, and established the northern kingdom of Jutland. They were, early in their Indian history, nomadic in character, and shepherds by occupation. Their ancient government was of the simplest, their villagers and tribes being ruled by councils of elders. The Rajpoots, who afterward overran that part of Indian, were odliged to respect the privileges of the Jats, and to receive a confirmation of their sovereignty from the hands of the Jat chiefs.

No Hindoo race more heroically resisted the invasion of the Mohammedans: the Jats checked could Mahmoud on the Indus, and Tamerlane could only conquer their legions by utterly destroying them. Thus the Jats, who had once been shepherds and nomads, became warlike and are to-day the beat native soloders unfer the English command. Since their conversion to Namuck they have been known as Sikhs, the name by which they are most familiar to Europeans. Physically, the Jats are full of vigor and masculine beauty and intelligent features, fine teeth, and glossy, curly, back beards, abundant hair, aquiline noses, and high, board, well-developed forehands; quick to learn, excellent subjects, prompt in the payment of their texes. Their carriage is noble and dignified; their manners agreeable. The women are taller than those of most Hindoo tribes, and are often fine-looking. They appear freely in the streets without veils; and they are noted for their neatness and taste with which, especially I the higher reanks, they attire themselves. The institutions of the Jats are purely democratic, each village being a complete republic in itself.

Contributed by:
Amandeep Singh Singhmaar, Adv.
Punjab & Haryana High Court
Now Based in London

अहंकारी का विनाश जरूर होता है। – तुलसीदास

आवश्यक सूचना

पाठकों के अनुमोदन हेतु वर्ष 2014 से 2017 की तीन वर्ष की अवधि के निम्नलिखित प्रश्न/मुददे प्रस्तुत है जिनका 30 दिन तक उत्तर भेजने की कृपा करे। उचित व क्षेष्ठ उत्तर देने वाले पाठको को बसंत पचंमी 2018 के अवसर पर सम्मानित किया जायेगा।

- मंहगाई कम हुई क्या
- पाकिस्तान झुक्का
- एक के बदले 10 सिर लाये गये
- महिला सुरक्षा बढ़ी
- गौ हत्या बन्द हुई
- काऊ बीफ (गाय के मांस) निर्यात पर रोक लगी।
- आर्थिक स्थिति सुधारी, मुद्राकरण बढा
- डालर की कीमत कम हुई
- काला धन वापस आया
- हर खाते में 15 लाख जमा हुये
- भ्रष्टाचार कम हुआ
- नोटबंदी का फायदा हुआ
- जातिवाद बन्द हुआ
- गावों का सुधार हुआ
- किसान आत्म हत्याये बंद हुई
- किसानों का कर्जा माफ हुआ

वैवाहिक विज्ञापन

- SM 4 Jat Girl (DOB 29.06.90) 27/5'3" Graduated from Shri Ram College of Commerce, Delhi. Employed as India Brand Manager for Swift in Maruti India Pvt. Ltd. Delhi. Earning 14 LPA. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Rathee, Dahiya, Lamba, Cont.: 09988099453
- SM 4 Jat Girl 24.5/5'1" M.A. Economics. Business man & Political family of Panchkula. Preference business man and politician. Avoid Gotras: Lakra, Panwar, Cont.: 09216000072
- SM 4 Jat Girl (DOB 18.08.88) 29/5'3.6" M.Sc. Math, B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM 4 Jat Girl (DOB 13.06.90) 27/5'2" B.Tech (CSE) Employed as Assistant in Central Excise Department at Chennai. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM 4 Jat Girl (DOB 01.12.90) 26.8/5'2" B.Sc (Computer Science), M.Sc (Math), B.Ed (Math) from MDU Rohtak Working in Tika Ram P.G. College (Lect) for 3 years. Avoid Gotras: Pannu, Duhan, Chahal, Cont.: 08901205312
- SM 4 (Divorced) Jat Girl (DOB 07.03.88) 29.6/5'5" M.Sc. B.Ed. (Chem.) Working as Lecturer in a private College. Father Bank Officer. Avoid Gotras: Nain, Sheokand, Rathee, Cont.: 09729331188
- SM 4 Jat Girl (DOB 19.02.89) 28.6/5'2" UGC, NET, M.Phill, Pursuing Ph.D from P.U. Chandigarh. Working as Lecturer in Government College since 2012. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali, Ambala. Avoid Gotras: Narwal, Pannu, Ahlawat, Cont.: 09416862660, 09729577161
- SM 4 Jat Girl (DOB 08.11.90) 26.10/5'3" Employed as Staff Nurse in Government Hospital, Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat, Cont.: 09463881657
- SM 4 Jat Girl (DOB 05.09.93) 24/5'4" B.Com, M.Com, B.Ed., NET cleared. Employed as Contract Lecturer in a private College. Avoid Gotras: Malhan, Kadian, Chahar, Cont.: 09467394303
- SM 4 Jat Girl (DOB13.10.91) 25.10/5'5" B.A., LLB (Hons) LLM, Advocate in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. No dowery seeker. Preferred match Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Cont.: 09417333298
- SM 4 Jat Girl (DOB 22.03.92)25.5/5'2" M.Com. Avoid Gotras: Hooda, Jaglan, Malik, Poria, Chahal, Doon, Deswal, Cont.: 09779238001
- SM 4 Jat Girl (DOB March1990) 27.5/5'7" Convent educated, Post Graduate, Employed, Highly educated family. Please contact only well educated family. Tcicity (around Chandigarh) based family preferred. Avoid Gotras: Sura, Malik. Cont.: 09888626559
- SM 4 Jat Girl 30/5'5" M.Sc., M.Phil. Pursuing Ph.D from P.U. Chandigarh, NET, JRF qualified. Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan. Cont.: 09056770986, 9888600668
- SM 4 working Jat Girl 26/5'3" BPT, MPT, CMT Employed as Consultant Chysiotheraphy in private hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar, Cont.: 09467680428
- SM 4 divorceed Jat Girl (DOB 03/1985)32.4/5'3" B.A., B.Ed., MSc. In Computer Science. Tri-City match preferred. Avoid Gotras: Hooda, Dahiya, Jatrana Cont.: 09417467848
- SM 4 Jat Girl (DOB 02.12.91) 25.8/5'5" M.Com, B.Ed. Employed as teacher in a private school at Zirakpur with Rs. 16000/- PM. Avoid Gotras: Kadyan, Jakhar, Malik. Cont.: 09815098264
- SM 4 Jat Girl (DOB 29.12.88) 28.7/5'3" MBBS. Employed as Medical Officer. Avoid Gotras: Dahiya, Suhag, Sangwan. Cont.: 09464952715, 08968571303
- SM 4 Jat Girl (DOB 21.04.88) 28.3/5'1" M.Tech from P.U. Chandigarh, GATE cleared. Avoid Gotras: Dhull, Goyat, Bhal. Cont.: 09467671451
- SM 4 Jat Girl (DOB 15.09.92)24.10/5'4" Graduate with B.Sc. I.T. Doing Job in a reputed private company in Gurgaon. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Dahiya. Cont.: 09211121447, 09211303770
- SM 4 Jat Girl (DOB 14.09.88) 28.10/5'3" LLB, LLM. Pursuing Ph.D. Father ACP/Delhi Police. Avoid Gotras: Sangwan, Gahlian, Dabas. Cont.: 09810212200, 08750871193

- SM 4 working Jat Girl 24.6/5'7" B.Tech, MBA, Preference Defence Officer. Avoid Gotras: Chhikara, Chhillar, Dalal, Tomar, Shokeen. Cont.: 09313662383, 09313433046
- SM 4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.8/5'5" B.Com, MBA, MIS, M.A (Economics.) Avoid Gotras: Panghal, Baloda, Bhaghasra. Cont.: 09463967847, 09463969302
- SM 4 Jat Girl(DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM 4 Jat Girl (DOB 19. 09. 91) 25.8/5'3" B.Tech. Employed in Management & Management Co. Pune. Avoid Gotras: Deswal, Malik, Rathi, Sangwan. Cont.: 08427945192
- SM 4 Jat Girl 26/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM 4 Jat Girl 30/5'2" B.A. Lab. Technician. Own business, Employed as Manager in Multi Coop. Society Bank at Sonepat. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Saroha, Khatri, Malik. Cont.: 09466944284
- SM 4 Jat Boy (DOB 05.06.88) 29.2/5'11" Employed as Computer Programmer in Food & Supply Deptt. Kaithal. Familay settled in Kaithal. Six acre Agriculture land. Avoid Gotras: Ravish, Sheoran, Badu, Kala. Cont.: 09729867676
- SM 4 Jat Boy 28/5'8" LLB, Practising Advocate, Own house, plot, flat, 3 acre agriculture land. Father Senior Advocate. Avoid Gotras: Balyan, Nehra. Cont.: 09996844340, 09416914340
- SM 4 Jat Boy (DOB 16.08.88) 29/5'10" MA (Public Admn.) Employed as Govt. JBT Teacher at Panchkula. Avoid Gotras: Dhillon, Siwach, Swag. Cont.: 09417424260
- SM 4 Jat Boy (DOB1882)35/5'9" M. A. (Eng.) M.A Mass Communications, M.Phil mass communications and Ph.D mass communications from K.U.K. Working as Deputy Chief Reporter in Dainik Jagran with Rs.35000/- P.M. Father ex-serviceman, mother retired teacher. Avoid Gotras: Malik, Gahlawat. Cont.: 09416616144, 08901447789
- SM 4 Jat Boy (DOB 16.02.90) 27.4 /5'8" B.Tech. Mechanical. Employed in TATA Business Support Services Ltd. Mohali. Own house in Manimajra Town Chandigarh. Agriculture land and house in native village in District Hisar. Avoid Gotras: Kajla, Kaliramna, Khyalia. Cont.: 09915791810
- SM 4 Jat Boy (DOB 25.12.91) 25.6/6'2" Employed as J.E. in Corporation Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Vigay, Rajan, Cont.: 0172-4185373
- SM 4 Jat Boy (DOB 02.05.91) 26.1/6', BA, JBT, CTET cleared, Pursuing B.Ed. Employed in IDBI Bank. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Dalal. Cont.: 09888120102
- SM 4 Jat Boy 29/5'11" Employed as team leader in IT Park Chandigarh with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras: Khatri, Ohlyan, Rathee. Cont.: 09833286255, 09468463165
- PQM4 handsome Jat Boy 30/5'10" MBA (finance) from France. CFA, B.Tech (PEC). DHA level three cleared. Employed in MNC at Mumbai with good package. Family settled at Panchkula. Only son. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Rathee. Cont.: 08360609162
- SM 4 Jat Boy (DOB13.08.89) 27/5'10" B. Tech. from India, M.Tech from Canada. Doing Job in TRONTO (Canada). PR status. Avoid Gotras: Sarao, Basiana, Ojaula. Cont.: 08288853030
- SM 4 divorced Jat Boy (DOB 04.12.81) 35.6/5'11" M. Com, MFC, MBA, Own business. Family settled at Jai Pur. Father retired from Rajasthan Govt. Originally from Rohtak (Haryana). Avoid Gotras: Tehlan, Budhwar, Hooda. Cont.: 09782178687
- SM 4 Jat Boy (DOB13.08.89) 31.7/6'1" MA, Mass Communications from London. Working in MNC Gurgaon with 12,5 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM 4 Jat Boy 30/5'9" B.Tech, MBA (UK) Marketing Manager, 60 lacks PA Avoid Gotras: Tomar, Poriya. Cont.: 09412834119
- SM 4 Jat Boy 30/5'10" MBA Working in MNC, CTC 14Lpa, Preferred B.Tech, MBA/Lecturer. Avoid Gotras: Panwar, Kadian, Dalal. Cont.: 09810280462
- SM 4 Jat Boy Oct.89, 5'10" B.Tech. CS. Working in Nida, MNC, Preferred working girl. Avoid Gotras: Nain, Sirohi. Cont.: 09810983708
- SM 4 Jat Boy (DOB 30.08.84) 32.8/6'4" B. Tech. Electronics & communications. Employed as Assistant Manager in Nationalized Bank. Parents retired Government officers. Avoid Gotras: Ahlawat, Malik, Sangwan. Cont.: 09417496903
- SM 4 Jat Boy (DOB 30.09.89) 27.6/5'10" B. Tech. Computer Engineering. Two flats and one showroom in Gurgaon. Fathr retired Principal. Avoid Gotras: Sheokand, Malik, Punia. Cont.: 09871044862
- SM 4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Preference M.D.,MBBS match. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM 4 Jat Boy (DOB 28.10.90)26.10/5'11" BDS, MDS.. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM 4 Jat Boy (DOB 01.08.85)31.6/6'1" M.A.,Mass Communication from London (England). Employed in MNC Company at Gurgaon with Rs.12.50 Lakh Package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM 4 Jat Boy (DOB Nov.1989) 27.1/6' B.Sc in Hospitality & Hotel Administration. Occupation Hotel Industries in Dubai, Package Rs.10 lakh P.A. Father, Mother Haryana Govt. Employees at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Tomar (Not direct Sangwan, Bhanwala). Cont.: 09416272188
- SM 4 Jat Boy (DOB 23.08.89) 27.4/5'10" B.Tech. Employed as Service Engineer in Tata Motor Ltd. In Haryana. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee. Cont.: 08950092430
- SM 4 Jat Boy 30.4/5'8" B.Pharma MBA working in reputed Pharma Company. Package 5 Lakh per Annuum. Avoid Gotras: Phalaswal, Juthra, Mehlawat. Cont.: 9466392155

शहीदों की याद दिलाता है चौबीसी का चबूतरा

हम शहर में दिल्ली–हिसार नेशनल हाईवे के किनारे पर एक चबूतरा है। इस चबूतरे को चोबीसी का चबूतरा कहा जाता है। वैसे तो इस चबूतरे का नाम चौबीसी खाप के नाम पर है, लेकिन यह चबूतरा देश की आजादी के लिए 1857 में हुई क्रांति के दौरान शहीद हुए देशभक्तों की याद में बनाया गया है। इस चबूतरे के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह चबूतरा हमारे लिए एक ऐतिहासिक धरोहर है। यह चबूतरा हमें भाईचारे का संदेश देता है और हमें राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेवारी के प्रति सजग करता है। यह चबूतरा हमें जाति, धर्म, सम्प्रदाय और अन्य भेदभाव से ऊपर उठकर आपस में मिल जुलकर देश व समाज के लिए काम करने की प्रेरणा देता है। चबूतरे का सीधा संदेश है कि कोई भी मंत्री, विधायक, नेता और अधिकारी समाज से ऊपर नहीं है। हर कोई समाज के लिए बना है, जिस व्यक्ति को समाज ने नकार दिया है, वह आगे नहीं बढ़ सका। जब–जब भी देश, प्रदेश और समाज पर आंच आई है और उनका गवाह बने ऐसे चबूतरे। देश व समाज को तोड़ने वालों को मुंह की खानी पड़ी है। चौबीसी का चबूतरा इस बात का गवाह है। जिन शहीदों को यहां पर दफनाया गया था, वे विभिन्न जातियों, धर्मों और सम्प्रदायों के थे। देश आजाद होने से पहले इस चबूतरे पर एक हिस्से में जहां मुसलमान नमाज पढ़ते थे। वहीं दूसरे कोने में हिन्दू आरती करते थे और सिख अपने गुरूओं की वाणियां पढ़ते थे। सभी जातियों और धर्मों के लोग यहां मिल जुलकर रहते थे। यहां चौबीसी चबूतरे पर सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक गतिविधियां चलती रहती हैं। इस चबूतरे को बहुत ही पवित्र माना जाता है। यहां पर समय–समय पर हवन–यज्ञ होते रहते हैं। सामाजिक बुराईयों के खिलाफ यहां पर पहुंचकर लोग आवाज उठाते हैं। किसी भी मुद्दे को सुलझाने के लिए उत्तर भारत की खाप पंचायतें भी यहां पर जुटती हैं। यह चबूतरा चौबीसी खाप पंचायत का मुख्य केन्द्र है। आंदोलनों और यात्राओं की शुरूआत भी लोग यहां ही करना शुभ मानते हैं।

चुनाव नजदीक आते ही बढ़ जाती है गहमागहमी

चौबीसी का चबूतरा यहां के लोगों की आस्था का मुख्य केन्द्र है। जब भी चुनाव नजदीक आते हैं तो यहां पर गहमागहमी और बढ़ जाती है। विभिन्न राजनैतिक दलों व सामाजिक संस्थाओं के लोग व पंचायती आदमी यहां पर अपने–अपने विचार प्रकट करते हैं। चौबीसी के नेता तो चबूतरे को चुनावी वैतरणी मानते हैं। जो भी उम्मीदवार अपनी पार्टी से टिकट लेकर महम पहुंचता है तो सबसे पहले वह चौबीसी चबूतरे पर पहुंचता हैं। और वह यहां पर दीप प्रज्ज्वलित कर शहीदों को याद कर चबूतरे पर माथा टेकता है। कहने का मतलब यह है कि सभी प्रत्याशी अपने चुनाव का श्री गणेश इस चबूतरे से ही करते हैं।

महम का चौबीसी चबूतरा लोगों को रोहतक की चौधर की राह दिखाता है। किसी जमाने में चौबीसी चबूतरे और यहां की खाप की इतनी मान्यता थी कि यहां के लोग विधायक या अन्य जन प्रतिनिधि चुनने के लिए चबूतरे पर बैठक करते थे और जो निर्णय यहां लिया जाता था, महम क्षेत्र की जनता उसी पर फूल चढ़ा देती थी। भले ही उम्मीदवार के पास किसी भी राजनैतिक दल की टिकट भी न हो। हल्के का विधायक वहीं बनता था, जो चबूतरे पर तय हो जाता था। एक तरफा चुनाव होता था। पार्टियों का सिमबल व उम्मीदवारों की योग्यताएं धरी रह जाती थी और चबूतरे से तय किया गया उम्मीदवार बंपर वोटों से जीतता था।

दिलों को लुभाता है चबूतरा

विवादों को सुलझाने के लिए चबूतरे पर जब पंचायतें होती हैं तो दोनों पक्षों को इस तरह समझाया जाता है, जिससे उनके गिले शिकवे दूर हो जाते हैं। पंचायते दोनों पक्षों के दिलों को मिलाने का काम करती है। कई बार तो बुजुर्गो द्वारा ऐसे उदाहरण दिए जाते है और ऐसी चर्चाएं की जाती है कि सुनने वालों के रोगंटे खडे हो जाते हैं। कभी कभार तो लोगों की आंखें भर आती हैं। खाप पंचायत में भाग लेने वाले बुजुर्ग कहते हैं तो कि भले सरकारी न्यायालयों में लोगो को न्याय मिल जातें हों, लेकिन उनके दिल में खोट बना रहता हैं। एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या का भाव कायम रहता हैं। मगर पंचायत में सारे गिले–शिकवे दूर हो जाते हैं।

तागें वाले को बना दिया था विधायक

महम चौबीसी चबूतरे का आाशीर्वाद पाकर कई लोग लोकसभा और विधानसभा तक पहुंचे हैं। प्रदेश में पहली बार 1967 में विधानसभा चुनाव हुए तो चौबीसी चबूतरे पर पंचायत बुलाई गई। निंदाना गांव के पढे लिखे साधारण नौजवान प्रोफेसर महासिंह का नाम तय किया गया। उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना पर्चा भरा और वह विधायक बना। प्रदेश के पहले शिक्षा मंत्री के तौर पर महासिंह ने शपथ ली।

पंचायत ऐसे व्यक्ति को चुनती थी, जो समाज के प्रति अपनी जिम्मेवारी को समझे और वह ईमानदार हो। प्रोफेसर महासिंह जीवित हैं, वे जीपों और बसों में आम आदमी की तरह सफर करते हैं और गांव में ही रहते हैं। 1972 के विधानसभा चुनाव में फिर चबूतरे पर पंचायत हुई और सैमाण गांव के उमेद सिंह को अपना उम्मीदवार घोषित किया और विधानसभा में पहुंचे। संयुक्त पंजाब के समय भी कई लोग चबूतरे से ही चुने जाते थे। संयुक्त पंजाब के समय की बात है कि गोहाना के बली गांव का एक रामधारी वाल्मीकि नाम का शख्स था, जो महम से गोहाना तक तांगा चलाता था। उस समय महम की तहसील गोहाना होती थी। महम की तहसील गोहाना होने की वजह से यहां के लोगों का गोहाना आना–जाना रहता था। यात्रियों के साथ उसका व्यवहार अच्छा था।

विधानसभा चुनाव का समय नजदीक आया। चौबीसी चबूतरे पर फिर पंचायत बुलाई गई। विधानसभा चुनाव में उम्मीदवार बनाने के लिए कई लोगों के नाम पर चर्चा हुई। लेकिन किसी के नाम पर सहमति नहीं बन पाई। अंत में खाप चौधरियों को तांगा चलाने वाले रामधारी वाल्मीकि का ख्याल आया, जो चबूतरे पर मौजूद भी नहीं था। गोहाना और महम के बीच तांगा चला रहा था। उसे ढूंढकर चबूतरे पर लाया गया। पंचायतियों ने रामधारी वाल्मीकि को विधानसभा चुनाव में नामाकंन करने के लिए कहा। उसने नामांकन किया और चुनाव में उसकी एक तरफा लहर चली। चुनाव जीतकर विधानसभा में पहुंच गया।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।